♦ चतुर्थ अध्याय ♦

"सुहाग के नूपुर उपन्यास में चित्रित नारी जीवन"

1 नारी के विविध रूप -

1.1 पारिवारिक रूप -

1.1.1 पुत्री

1.1.1.1 आदर्श पुत्री - कन्नंगी

1.1.1.2 पोष्यपुत्री - माधवी

1.1.1.3 वेश्यापुत्री - मणिमेखला

1.1.1.4 देवदासी पुत्री - ललिता

1.1.2 पतिव्रता - पत्नी

1.1.2.1 पतिव्रता पत्नी - कन्नगी

1.1.3 वात्सल्यमयी माता

1.1.3.1 माधवी

1.1.3.2 पेरियनायकी

1.1.3.3 चेलम्मा

1.1.4 व्यभिचारी माता

1.1.4.1 वेश्या माता - माधवी

1.1.4.2 वेश्या माता - पेरियनायकी

1.1.4.3 देवदासी माता - रूद्रम्माल

1.2 परिवारेतर रूप -

1.2.1 दासी

1.2.2 दासी - देवंती

1.2.3 दासी - नागरत्ना

1.2.4 देवदासी - रूद्रम्माल

1.2.5 कलंकिता

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

2 नारी समस्याएँ

2.1 वेश्या समस्या -

2.1.1 धार्मिक दृष्टि से

2.1.1.1 देवदासी प्रथा

2.2 सामाजिक दृष्टि से

2.2.1 उपभोग्य वस्तु

2.2.2 उपजीविका का साधन

2.2.3 आश्रय / आश्रित

2.2.4 हेय जीवन

2.2.5 रोगग्रस्त जीवन

2.2.6 नाजायज संतान

3 अवैध मातृत्व की समस्या -

3.1 अधिकारों से वंचित

3.2 वंश-परंपरा विहिन

3.3 निराधार जीवन

3.4 देवदासी पुत्री का सम्मान

4 कुलवधु , नगरवधु समस्या

4.1 कुलवधु - कन्नगी

4.2 नगरवधु -माधवी

4.3 नगरवधु - पेरियनायकी

4.4 नगरवधु - चेलम्मा

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

"सुहाग के नूपुर उपन्यास में चित्रित नारी जीवन"

1) नारी के विविध रूप -

समाज में नारी के अक्षुण्ण महत्त्व को किसी प्रकार अमान्य नहीं किया जा सकता । समाज के निर्माण और विकास में सदा ही नारी का अमूल्य योगदान रहा है । नारी अबला है और पुरुष के अधीन हैं यह व्यर्थ की आलोचनाएँ है , जो कि उसे और भी हीन बना रही है । नारी की कोमलता ही उसका अबलापन है ,उसका रूप ही उसका बंधन है । नारी का कार्य नवनिर्माण करना, गृहस्थ जीवन को संचालित करना और अपने हृदय का मधुररस विश्वपर ढलकाना है । नारी देवी है , माता है , ममता देनेवाली बहन है , स्नेह देनेवाली प्रेरणा है , नवजीवन देनेवाली पत्नी है । वह मधुर मुस्कान से समस्त वातावरण को आलोकित करती है । हर रूप में नारी का जीवन महत्त्वपूर्ण है ।

नागर ने विशेष रूप से नारी जीवन के सामान्य स्तरीय कुछ ऐसे विरल एवं विलक्षण चरित्रों की सृष्टि की है , जिनका व्यक्तित्व सजीव तो है ही , इसके अतिरिक्त उनमें संवेदना की गहराईयों को झकझोरने को क्षमता भी है । नारी जीवन की ओर देखने का नागर का विशेष दृष्टिकोन है । उनके अधिकांश उपन्यासों में नारी पात्र विशेष प्रभावशाली ढ़ंग से चित्रित हुए है । उनके नारी पात्रों की रूपरेखाएँ बड़ी आकर्षक है । भावोद्वेलन का रेखांकन बड़ा मार्मिक है । उपन्यास में अन्य पात्र तो होते है, लेकिन ध्यान में रहती है उनकी नारी । नारी जीवन की विविध छटाओं का उन्होंने कुशलता एवं सूक्ष्मता से अंकन किया है , भावों की छिपी हुई मंजुषा खोलकर पात्र का हृदय पाठकों के सामने रखने का अद्‌भूत चातुर्य नागर में दिखाई देता है । वे नारी को ऊँची सतह पर ले जाना चाहते हैं । इस काल में भी भारतीय मर्यादा के अनुकूल बर्ताव करनेवाली और परंपराओं की कल्पना पर मिटनेवाली नारियों का चित्रण किया गया है । उन्होंने जीवन को आदर्शों के ऊँचे स्तर पर उठाने का प्रयास करनेवाली नारियों का चित्रण किया है ।

उपन्यासो में नायिका का स्थान अधिक महत्त्व पूर्ण है । नारी श्रध्दा , प्रेम , समर्पण आदि सद्‌गुणों से युक्त उज्वल आदर्श रूप में रहती है । कन्या , प्रेमिका , परिणिता , माता , नर्तकी , विलासिनी , वेश्या , पत्नी इन कई रूपों में नारी को दिखाया जाता है । नायिका को इन रूपों में चित्रित कर उनका रूपवर्णन करते समय लेखकों की लेखनी तीव्र गति से चलती है । जिसमें सत्य

भी है और स्वप्न भी , वास्तविकता भी है और आदर्श भी है । जयशंकर प्रसाद जी ने 'कामायनी' महाकाव्य में नारी के संबंध में लिखा है -

"नारी तुम श्रध्दा हो,
विश्वास रजत नग-पग-तल में
पियुष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में ।"

इसी तरह उपन्यासकारों ने नारी के प्रति अपार सहानुभूति दिखायी है । प्रेम के प्रत्येक अविष्कार में उसके हृदय की भावुकता दिखाई देती है । नागर ने नारी के सतीत्व रूप को ही परम आदर्श माना है । श्रध्दा , क्षमा , करुणा नारी का संबल है तो सहानुभूति , सहिष्णुता , सेवा तथा सहयोग नारी का धर्म है । गृहिणी का कर्तव्य उसके जीवन का लक्ष्य है । साहित्यकार अपने अतीत के दार्शनिक संस्कार , समकालीन चिंतन , पारिवारिक , सामाजिक , राजनैतिक परिस्थितियाँ आदि बातों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । इन विशेषताओं को मान्य करते हुए नागर साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान निर्माण करने में समर्थ हुए है । उनके नारी पात्र आत्मपीड़ा सहकर सत्यान्वेषण करते हुए दिखाई देते है ।

अमृतलाल नागर प्रेम के पुजारी हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी को अनेक रूपों में चित्रित किया है उदा - पुत्री , पत्नी , माता , प्रेमिका , वेश्या , देवदासी आदि । त्याग , सेवा , प्रेम , विद्रोह आदि अनेक विशेषताओं से युक्त नारी का चित्रण किया है । 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नारी हृदय की विशालता और विलक्षणता को विविध पात्रों के द्वारा स्पष्ट करने में वे सफल हुए हैं । मनोवैज्ञानिकता का आधार लेकर कथा की अपेक्षा भावविभावों का चित्रांकन करने में नागर का कौशल्य दिखाई देता है । नागर के अंतर्मुखी अभियान का अनुष्ठान 'सुहाग के नूपुर' में परिलक्षित होता है । उन्होंने हिंदी साहित्य को कई अमर पात्र दिए हैं ।

1.1) पारिवारिक रूप -

1.1.1) पुत्री -

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में नारी के अनेक रूपों के साथ-साथ पुत्री के विविध रूपों को चित्रित किया है । 'सुहाग के नूपुर' इस उपन्यास में कन्नगी को परंपरागत पुत्रियों के अंतर्गत चित्रित किया है । तो माधवी को विद्रोही पुत्रियों के अंतर्गत चित्रित किया है । मणिमेखला को भयत्रस्त , सहमी पुत्री के रूप में और ललिता को ईर्ष्याग्रस्त पुत्री के रूप में चित्रित किया है । इन दोनों का उपन्यास में स्थान गौण है । नागर ने नारी स्वभावानुरूप पुत्रियों के अलग-अलग

स्वभाव दिखाए है , जो उपन्यास की महत्ता बढ़ाते है । इनमे वैविध्य दिखाई देता है । इन पुत्रियों के माध्यम से नए रिश्तों पर प्रकाश डालने में नागर सिध्दहस्त हुए है ।

1.1.1.1) आदर्श पुत्री - कन्नगी

उपन्यास का महत्त्वपूर्ण नारी पात्र उपन्यास की नायिका कन्नगी है । कावेरीपट्टणम् के महाधनी सेठ मानाइहन की इकलौती पुत्री कन्नगी सुंदरता में अद्वितीय है । उसे माता-पिता ने बड़े लाड़-प्यार से पढ़ाया-लिखाया और कुललक्ष्मी के संस्कारों से मंडित किया । पिता की लाड़ली होने के कारण पिता ने विवाह योग्य होनेपर महालिंगम को घरजमाई बनाने का विचार किया , लेकिन उसके चाल-चलन ठीक न देखकर उन्होंने यह विचार छोड़ दिया । फिर अतुल धनाधीश सेठ मासात्तुवान के इकलौते पुत्र कोवलन की प्रशंसा सुन कोवलन-कन्नगी का विवाह धुमधाम से किया । सुहाग रात पर कोवलन उससे पूछता है , तुम कौन हो ? अपने पति के चरण छू कर कन्नगी कहती है , 'आप की दासी' । पहली ही रात कन्नगी अपने मातृ-पितृ-कुल के गौरव का परिचय देती है । जब कोवलन कन्नगी को मार-पीटकर घर से निकलता है, तब वह अपने पिता के घर न जाकर श्वसुरद्वारा बनाई धर्मशाला में जाकर रहती है । वह अपने पिता को किसी भी हालत में दुखी नहीं देख सकती । ये सारी बाते पिता को मालूम होने पर वे तुरंत अपनी लाड़ली से मिलने जाते है । सालों बाद एक-दूसरे को देख दोनों की आँखें विवश होकर बरस पड़ी । अपनी बेटी का दुख देखकर पिता ने कहा , "इतने आँसू भी नहीं बिटियाँ ! तू तो मेरा पुत्र है । तुझे इस कुल में पाकर अब हमारे पितृगण कभी तर्पण के प्यासे न रहेंगे ।" [1] तुम्हारी जैसी गुणी पुत्री पाकर मैं धन्य हुआ । पिता ने जब उसे घर चलने को कहा, तब वह साफ इन्कार कर पिता सारा धन दान कर संन्यास लेने को कहती है । इससे वह श्वसुरकुल और पितृकुल दोनों कुलों की रक्षा कर अपना धर्म निभाती है इस तरह नागर ने कन्नगी को आदर्श पुत्री के रूप में चित्रित किया है ।

1.1.1.2) पोष्यपुत्री - माधवी

उपन्यास क महत्त्वपूर्ण नारी पात्र उपन्यास की प्रतिनायिका माधवी है । माधवी वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री है । माधवी जब तीन साल की थी, तब पेरियनायकी ने उसे खरीदा था । माधवी बचपन में जब-जब रोती तब-तब पेरियनायकी उसे अपने गोद में बिठाकर प्यार करती , उसका हठ पूरा करती । पेरियनायकी ने ही उसे पढ़ाया-लिखाया , नृत्य-संगीत की शिक्षा देकर उसका पालन-पोषण किया । माधवी युवा है , सुंदर है , चतुर है , नृत्यांगना है । नृत्योत्सव में 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार के साथ-साथ कोवलन को जीतकर वह अपना कलानैपुण्य सिध्द करती है । घमंड के कारण माधवी हमेशा माँ को चिंता में डालती है । माधवी वेश्या होकर भी

एकनिष्ठ रहकर कोवलन की पत्नी बनकर कुललक्ष्मी बनना चाहती है । लेकिन उसका यह सपना अधूरा रह जाता है । सुहाग के नूपुर प्राप्त करने की लालसा वह अंत तक नहीं छोड़ती । कोवलन की पत्नी कन्नगी से ईर्ष्या कर वह यह सिध्द करना चाहती है कि, उसमें ऐसी कोनसी बात है जो मुझमें नहीं ? यह सब सुन पेरियनायकी उसे समझाती है , "हम क्या करें बेटी ! हम तो नगरवधु है ! हमारा पतिव्रत-धर्म धन से बँधा है । पुरुष उसका माध्यम है और प्रेम व्यवसाय ।" [2] इतना समझाने पर भी माधवी माँ की बातें नहीं सुनती । कोवलन जब माधवी को दिया वचन पूरा करने कन्नगी को कोठे पर ले जाता है तब माधवी अपने नृत्य पर गर्व कर कन्नगी से ईर्ष्या भरी बातें करती है । पेरियनायकी उसे समझाने का प्रयास करती है । लेकिन माधवी आवेश में कहती है , "चुप रहो अम्मा ! मेरे आवेश को तुम्हारा ठंडा , बुझा हुआ , दासी संस्कारों से युक्त हृदय समझ नहीं सकेगा । जिस अनुपम पुरुष को मैंने नृत्यगीत , हास-विलास और कटाक्ष .... बड़ी लगन से रिझा - रिझाकर आनंद के लोक में पहुँचाया है , उस दिव्य श्रृंगारी आत्मा को रिझाने के लिए इस स्त्री में कौन-कौन से गुण हैं , यह देखूँगी । नागरत्ना ! देती क्यों नहीं घुँघरू ?" [3] माधवी सिर्फ कन्नगी को नीचा दिखाना चाहती थी , लेकिन कोवलन की नजरों में खुद ही गिर जाती है । पेरियनायकी के साथ बार-बार अनबन कर दोनों अलग-अलग रहती है । नूपुर पाने की लालसा तथा अपनी बेटी मणिमेखला को अधिकार दिलाने के लिए माधवी अंत तक लड़ती है और पागल हो जाती है । इस तरह नागर ने उसे विद्रोही पुत्री के रूप में चित्रित किया है ।

1.1.1.3) वेश्यापुत्री - मणिमेखला

माँ के दुर्व्यवहार का बोझ सहती , सहमी , डरी फिर भी सच्चाई का स्वीकार करनेवाली बालिका के रूप में मणिमेखला का चित्रण हुआ है । छोटी सी उम्र में ही वह अपना जीवनदर्शन बताती है , "आचार्य कहा करते थे , जीवन में बड़ा दुख है । बात सच है अम्मा ! बड़ा दुख है ! देखो न , यह सागर भी रोता है । काले मेघों से ढका यह आकाश कैसा दुखदाई लग रहा है अम्मा ! हर कोई दुखी है । केवल बुद्ध दुखी नहीं । वे तथागत हैं । आचार्य यही कहते थे । .... तुम भी रो रही हो अम्मा ?" [4] उसकी इन बातों से पता चलता है छोटी सी खेलने-कुदने की उम्र में ही उसने कितना दुख सहा है । इस प्रकार नागर ने मणिमेखला का चित्रण किया है ।

1.1.1.4) देवदासी पुत्री - ललिता

देवदासी राजम्मा की पुत्री ललिता भी महत्त्वपूर्ण नारी पात्र है । वह सुंदर आकर्षक है , नृत्यनिपुण है । नृत्योत्सव में माधवी के साथ वह अच्छा नृत्य करती है लेकिन ईर्ष्या और जलन के कारण वह पराजित होती है । पराजित होने पर माँ के पास जाकर रोती है ।

इस प्रकार नागर ने अपने उपन्यास में इन चारों पुत्रियों द्वारा आदर्श पुत्री , विद्रोही पुत्री , डरी , सहमी , घमंडी पुत्री का चित्रण किया है । इनमें उन्हें सफलता मिली है ।

1.1.2) पतिव्रता पत्नी -

हिंदी उपन्यासों में पतिव्रता पत्नी का चित्रण युगानुरूप होता आया है । विवाह याने केवल दो शरीरों का मिलन न होकर दो आत्माओं का मिलन होता है । डॉ. सुधीरकुमार ने कहा है , "उनके मतानुसार विवाह तब तक सफल नहीं हो सकता , जब तक उसे एक पवित्र संस्कार न मान लिया जाय । विवाह शारीरिक गठबंधन ही नहीं; बल्कि मन और आत्मा का मिलन भी होता है । विवाह के इस रूप में मिलने पर ही दांपत्य जीवन सुखी शांत समृध्दमय और मंगलमय होता है । जहाँ पर दोनों प्राणियों में किसी प्रकार का मनमुटाव नहीं होता और न किसी प्रकार का अभाव ही होता है ।" [5] सनातन काल से भारत में नारी जीवन का सबसे बड़ा धर्म माना गया है - 'पातिव्रत धर्म' । पति ही नारी का देवता है , आराध्य है । इस देवता को आत्मसमर्पण करके नारी ने यमराज पर विजय प्राप्त की है । पर ये पतिदेवता भी मनुष्य ठहरे । उनमें गुण और दुर्गुण भी है । सभी मनुष्य सदाचारी थोडे ही हो सकते है ? कुछ दुराचारी , व्यसनी और रोगी भी पति थे । लेकिन इनकी पत्नियों को "पातिव्रत धर्म" का पालन करना अनिवार्य था । नारी की इस असीम शक्ति ने ही उसकी भयानक दुर्गति बनाई और जिस पुरुष ने उसकी दुर्गति बनाई उसी ने उस सहनशक्ति को मधुमधुर नाम दिया 'पातिव्रत धर्म' । पुरानमतवादी लोंगो का कहना था कि ,"पति अनपढ़ , आवारा , व्यभिचारी , दुर्व्यसनी कैसा भी क्यों न हो , पति ही नारी की गति है, इहलोक, परलोक है ।" [6]

1.1.2.1) पतिव्रता पत्नी - कन्नगी

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने उच्चकुलोत्पन्न कन्नगी को पतिव्रता पत्नी के रूप में चित्रित किया है । कन्नगी कावेरीपट्टणम् के अतुल धनाधीश मानाइहन की इकलौती पुत्री है । वह युवा है , सौंदर्यवती है , व्यवहार कुशल , सयंमी, कर्तव्यनिष्ठ , सहनशील , पतिव्रत धर्म का पालन करनेवाली सहृदयी कर्तव्यपारायण भारतीय नारी है । सप्तमी की तिथि पर कावेरीपट्टणम् के सर्वश्रेष्ठ दो अतुल धनाधीशों की इकलौती संतान कोवलन और कन्नगी का विवाह धूमधाम से होता है । सुहागरात पर ही कोवलन कन्नगी को वेश्या माधवी के कोठेपर ले जाता है । माधवी से ईर्ष्या न कर कन्नगी उसके प्रश्नों के उत्तर शांत भाव से देकर उसे पराजित करती है । कन्नगी-कोवलन के कोठे पर जाने की बात नगरभर में फैलती है । मासात्तुवान कन्नगी को माधवी के कोठेपर जाने की बात

पूछते है तो वह पति की तथा कुल की लाज बचाने के लिए झूठ बोलती है । कन्नगी से प्रभावित होकर कोवलन उससे क्षमायाचना करता है , तब कन्नगी उसे तुरंत माफ कर देती है ।

व्यापार के लिए पति-पत्नी मिलकर विदेश जाते है । वहाँ पर अपनी प्रबंधपटुता से कन्नगी कोवलन को अपनी ओर आकर्षित करती है । दोनों एक-दूसरे के प्रेमाकर्षण में बँधते है । इतने में कोई दूत आकर कोवलन को खबर देता है , वह सून कोवलन बिना कुछ कहें निकल जाता है । नगर में माधवी और कोवलन के गायब होने की चर्चा होती है । लेकिन कन्नगी अपने पति के विरुध्द कुछ भी नहीं कहती । कोवलन माधवी के पास ही रहता है । महिनों बाद कोवलन वापस कन्नगी के पास आता है , तब कन्नगी अपने सुहाग देवता की आरती उतारती है । पति को पलंगपर बिठाकर उसकी सेवा में रत होती है । उसकी अनुपस्थिति में घटी सभी घटनाओं की सूचना वह उसे देती है । लेकिन अपने पति से माधवी के बारे में एक शब्द से भी नहीं पूछती । कोवलन चीढ़कर कन्नगी से कहता है , मैं इतने दिन कहाँ था ? क्या करता था ? नहीं पुछोगी ? मेरे यहाँ न होने से तुम्हें दुख नहीं होता ? तब कन्नगी कहती है , "दासी का दुख नहीं पूछा जाता स्वामी ! मुझे आपके सुख में सुख मानने का संस्कार मिला है ।" [7] यह सुन कोवलन उससे क्षमा माँगता है । तब वह पति से लिपटकर रोने लगती है ।

माधवी कोवलन की पुत्री की माँ बननेवाली है यह खबर सुनकर भी कन्नगी कुछ नहीं कहती ; बल्कि उसे उपहार भेजती है । यहाँ तक की वंशवृक्षपट्ट भी भेजती है । जब माधवी अपनी बेटी को लेकर कोवलन के घर रहने आती है तब कन्नगी उनकी सेवा में जुट जाती है । वह अपना एक-एक आभूषण बेचकर घरखर्च चलाती है , लेकिन पति को घर की आर्थिक हीन स्थिति के बारे में कुछ नहीं कहती । माधवी कोवलन के साथ सात भॉवरे लेकर कन्नगी के अधिकर छीनती है । तब कन्नगी वंशनिधीकोष की चाबियाँ देती है ; लेकिन कुललक्ष्मी का महत्त्वपूर्ण आभूषण सुहाग के नूपुर देने से साफ इन्कार करती है । परिणामतः घर से निकाली जाने पर भी वह पिता के घर न जाकर श्वसुरद्वारा बनाई गई धर्मशाला में जाकर रहती है और अपने श्वसुरकुल की लाज बचाती है ।

अंततः माधवी कोवलन का साथ छोड़ राजपुरुषद्वारा कोवलन को पिटवाती है । बेसुधी की अवस्था में चेलम्मा उसे धर्मशाला में कन्नगी के पास ले आती है । पति की हीन अवस्था देखकर सबकुछ भूलकर वह पति की सेवा में जुट जाती है, तथा उसका मनोबल बढ़ाती है । यह सब देख कोवलन अश्रुकंपित स्वर में कहता है, "तुम्हारे चरण छू लूँ सती ! आज के दिन के लिए मैं सात जन्मों तक भी तुमसे उऋण न हो सकूँगा ।" [8] नई जिंदगी तथा नया व्यापार शुरू करने के

उद्देश्य से कोवलन को वह अपने नूपुर बेचने के लिए देती है । कोवलन आश्चर्य से कन्नगी को देखते हुए कहता है , की माधवी को देने के लिए मैं नूपुर माँग रहा था, तब जुल्म सहकर भी तुमने दिए नहीं और आज बिना माँगे दे रही हो । तब कन्नगी ने कहाँ , "ये नूपुर आपकी प्रतिष्ठा के प्रतीक है स्वामी ! विलास के नहीं । मैंने नया कुछ नहीं किया , न तब , न अब । इन्हें बेचकर काम चलाइए ।" [9] यहाँ कन्नगी के विचार महत्त्वपूर्ण है , सबकुछ सह कर भी वह अपने आपको सामान्य ही समझती है ।

भाग्य के अनुसार कोवलन मदुरा में नूपुर बेचते समय चोरी के इल्जाम में बंदी बनाया जाता है ; क्योंकि वैसे ही नूपुर महारानी के भी थे, जो चोरी हुए थे । तब संकट में फँसे पति के लिए चंडिका रूप धारण कर कन्नगी मदुरा के शासन को ललकारती है । पति की बेगुनाही का सबूत देकर उसे निर्दोष सिध्द करने में सफल होती है सति सावित्री की तरह पति को मौत के मुँह से बचाती है ।

इस प्रकार अमृतलाल नागर ने कन्नगी को पतिव्रता पत्नी के रूप में चित्रित किया है । वह कुलवधु है , कुल की मान-मर्यादाओं का उत्तरदायित्व निभाती है । उसके मन में पति के प्रति श्रध्दा , कृतज्ञता है । जीवन के विविध अनुभवों से उसने बहुत कुछ सीख लिया है । सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति , प्रगल्भ बुद्धिमत्ता तथा तीव्र भावुकता के कारण लगता है , जैसे दर्शन को उसने आत्मसात किया है । मनोविज्ञान की नस-नस को पहचानकर कोवलन में परिवर्तन लाने में वह सफ्ल होती है । उसका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है । पति के लिए वह माधवी को भी बर्दाश्त करती है । उसमें कही भी ईर्ष्या , द्वेष दिखाई नहीं देता । परिणामतः आदर्श चरित्र की चरमसीमा पर पहुँचकर निखर आयी है । भारतीय परंपरा में नारी के पत्नी रुप को अत्यंत महत्त्व का स्थान है । परित्यक्ता **नारी की स्थिति समाज बडी करुणाजनक होती है यह स्पष्ट किया गया है । पतिव्रता पत्नी का** चित्रण करने में नागर को पूर्णतः सफलता मिली है ।

1.1.3) वात्सल्यमयी माता -

नारी के लिए संतान की कामना करना स्वाभाविक है । क्योंकि संतान उसके व्यक्तित्व और नारीत्व की चरम परिणति और उपलब्धी मानी जाती है । प्रजनन विवाह का आवश्यक अंग है । विवाह के बाद पत्नी की मातृत्व की उपलब्धी सामाजिक और पारिवारिक स्थायित्व का अनिवार्य अंग है । अपने व्यक्तित्व के लघु रूप जैसे शिशु के निमित्त प्राकृतिक रूप में उसमें वात्सल्य भावना उद्वेलीत रहती है । "मातृत्व की भावना नारी को शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही दृष्टियों से तृप्त करती है । इसलिए उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए अपेक्षित इस प्रकार से भावना के मूल्य के

अंतर्गत सम्मिलित करना अनिवार्य हो जाता है ।" [10] नारी के लिए माँ बनना उसके जीवन की पूर्णता और सार्थकता है । माँ कितना प्यारा शब्द है , इसमें कितनी मधुरता है । माँ स्त्री नहीं देवी है । बच्चे के लालन-पालन तथा उसके व्यक्तित्व के निर्माण में माता का प्रभाव होता है । बचपन में मिलनेवाला माता-पिता का प्रेम संतान के जीवन को पुष्ट करता है । वात्सल्य की छत्रछाया में वह शिशु को सदृढ़ बनाती है । वह प्रेम जीवन का संबल बन जाता है । माता-पिता का प्रेम निरपेक्ष होने से अतुलनीय है । माँ के ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते । अमृतलाल नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में माँ के पवित्र रूप को चित्रित किया है । वात्सल्यमयी माँ के रूप में माधवी, पेरियनायकी , चेलम्मा आदि स्त्रियों का चित्रण हुआ है ।

1.1.3.1) माधवी -

नागर ने माधवी को वात्सल्यमयी माँ के रूप में चित्रित किया है । माधवी माँ बनने पर परमसुख का अनुभव कर आनंदित होती है । उसकी मणिमेखला देवी पर श्रध्दा होने से अपनी बेटी का नाम भी मणिमेखला रखती है , उत्सव मनाती है । कोवलन की हवेली से वंशवृक्षपट्ट मँगाकर उसपर अपनी बेटी का नाम लिखवाना चाहती है । कोवलन सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण विरोध करता है तो माधवी कहती है , "तुम्हारे वंश को भविष्य में मेरे गर्भ की ज्योती ही उजाला प्रदान करेगी । वंशवृक्ष पर मेरी मणिमेखला का नाम अवश्य अंकित होगा ; अन्यथा मैं प्राण दे दूँगी ।"[11] अपनी बेटी के भविष्य को बदलने के लिए तथा उसे समाज में इज्जत दिलवाने के लिए वह लड़ती है । माधवी वेश्या है, पर अपनी बेटी को कुलवधुओं के संस्कार से मंडित करना चाहती है । वेश्या जीवन से उसे बाहर निकालकर कन्नगी के संस्कारों की शिक्षा देने के लिए ललायित है । इससे उसमें निहित वात्सल्यभाव दिखाई देता है । कोवलन जब उसका साथ नहीं देता, तो वह महाराज से न्याय माँगने के लिए तैयार होती है । अपनी बेटी की ममता के खातिर तथा उसे सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने के लिए वह मरने के लिए भी तैयार है । अपनी बेटी को छोड उसे और किसी भी बात में रस नहीं है । वह बेटी के भविष्य के बारे में सोच-सोचकर खयालों में खोई रहती है ।

राजपुरुष जब माधवी को वेश्या बनने के लिए मजबूर कर उसके एकपुरुष व्रत को ठेंस पहुँचाता है तब वह अपने वेश्या जीवन की छाया भी मणिमेखला पर नहीं डालना चाहती । उसके भविष्य की चिंता कर माधवी राजपुरुष से कहती है , "एक प्रार्थना है । वर्षा रुकते ही मेरी बेटी को मानाइहन की बेटी के पास भिजवा दीजिएगा ! उसके जीवन को कन्नगी ही अमृतदान दे सकेगी !" [12] अपना जीवन तबाह होते हुए भी बेटी के भविष्य के लिए तत्पर रहनेवाली माधवी का वात्सल्यमयी रुप यहाँ दिखाई देता है । अपनी बेटी पर जरा सी भी आँच न आए यही वह चाहती

है । कुछ भी हो जाए अपनी बेटी को मासात्तुवान की पोती का अधिकार दिलवाना चाहती है, इसलिए अंत में कन्नगी के पास भेजने की इच्छा व्यक्त करती है । एक माँ की अपनी बेटी के लिए जीवनभर संघर्षरत रहने की कोशिश दिखाई देती है । इस प्रकार नागर ने माधवी को वांत्सल्यमयी माँ के रूप में चित्रित किया है ।

1.1.3.2) पेरियनायकी -

प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने पेरियनायकी को वात्सलमयी माँ के रूप में चित्रित किया है । पेरियनायकी ने अपने भविष्य की चिंता कर माधवी को मोल देकर खरीद लिया था । बचपन में माधवी जब रोती तो पेरियनायकी उसे अपने गोद में लेकर बडे प्यार से समझाती, उसकी सभी माँगो को पूरा करती थी । माधवी उसकी पोष्यपुत्री है । उसने माधवी को बड़े लाड़-प्यार से पढ़ाया-लिखाया , नृत्य-संगीत की शिक्षा देकर वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत किया । माधवी पहली ही भेंट में कोवलन को अपमानित करती है, तब पेरियनायकी तुरंत कोवलन से माफी माँगती है । कोवलन - कन्नगी के विवाह की बातें सुन माधवी के मन को पेरियनायकी भाँप लेती है । अपने कलजे से लगाकर माथेपर स्नेहभरा हाथ फेरते हुए वह समझाती है , "आरंभ में बहुतों को ऐसे अनुभव होते हैं बेटी ! मुझे भी हुआ था । मन को पानी के समान बनाओं बेटी ! आँच पर चढ़े तो गरम हो जाए और उतारने पर फिर ठंडा । मन को आँच से उतारने की कला भी सीखो ।"[13] माधवी को प्यार में तड़पते देख वह उसे समझाती है जिस योनी में हमारा जन्म हुआ है उसी के अनुरूप हमें जीना पडता है । कोवलन-कन्नगी की सुहागरात पर कोवलन माधवी को दिए वचन का पालन कर कन्नगी को उसके कोठेपर ले आता है । माधवी कन्नगी से ईर्ष्या और जलन भरी बातें करती है । यह देख पेरियनायकी माधवी को चुप कराने के उद्देश्य से बीच-बीच में टोकती है । वह अपनी बेटी पर चेलम्मा का प्रभाव देख उसकी तरह माधवी के जीवन की दुर्गति न हो इसलिए माधवी को वेश्या जीवन की वास्तविकता समझाती है । लेकिन माधवी है कि कुछ सुनना नहीं चाहती और अंत में वही करती है जिसका पेरियनायकी को डर था । बेटी की दुर्गति देखकर उसे बहुत दुख होता है । इस प्रकार नागर ने पेरियनायकी को वात्सल्यपूर्ण भाव से माधवी के हठपूर्ण स्वभाव को बदलने का प्रयास करनेवाली माँ के रूप में चित्रित किया है ।

1.1.3.3) चेलम्मा -

गुरु माँ के रूप में चेलम्मा को चित्रित किया गया है । वास्तव में वह माधवी की माँ नहीं है, लेकिन उसे माँ की तरह ही प्यार करती है । रिश्ते में वह उसे मौंसी लगती है और उसकी नृत्यगुरु है । नृत्योत्सव में माधवी विजयिनी होने पर वह नाच उठती है । कोवलन के विवाह में नृत्य करने

के लिए माधवी तैयार नहीं होती, तब चेलम्मा गुरुदक्षिणा के रूप में नृत्य करने के लिए उसे मनाती है । वंशवृक्षपट्ट की बात पर कोवलन से अनबन होने पर कोवलन माधवी को धक्के मारकर निकालता है । तब अचानक चेलम्मा को देख माधवी उसे लिपटकर रोने लगती है । चेलम्मा उसकी पीठ पर स्नेहभरा हात फेरते हुए उसे समझाती है , "नहीं मानी ना, जेठ की धूप-सी ही तपी । न सती बनी , न वेश्या ! देखती हूँ कि मेरी बेटी जहाँ-की-तहाँ रह गई ।"[14] चेलम्मा उसे लेकर पेरियनायकी के पास जाती है । चेलम्मा और पेरियनायकी दोनों मिलकर माधवी को समझाते है, कि हमें वेश्या होने के कारण कुलवधुओं की तरह जीने का मोह छोड़कर समाज के कारण तिरस्कृत वेश्या जीवन ही जीना पड़ता है ।

इस प्रकार नागर ने माधवी , पेरियनायकी और चेलम्मा के माध्यम से वात्सलमयी माँ को चित्रित किया है । उनमें सर्वश्रेष्ठ माँ के रूप माधवी को दिखाया है । जो अपनी बेटी के भविष्य के लिए हमेशा से चिंतित रहती है । माँ तो सिर्फ माँ होती है, चाहे वह वेश्या हो या चाहे कुललक्ष्मी हो । उसकी ममता में तो कोई फर्क नहीं पड़ता । लेकिन समाज का उनकी ओर देखने का दृष्टिकोन अलग ही होता है । इस प्रकार नागर ने इन पात्रों के माध्यम से यह दिखाया है कि वेश्या होकर भी वे स्त्रीत्व को नहीं भूलती यही कारण है कि उसके अंदर की माँ से उसे कई बार संघर्ष करना पड़ता है । वेश्याओं के मन में भी मातृत्व की लालसा होती है । लेकिन उनकी इच्छा यह होती है कि अपनी संतान को समाज में आदर-सम्मान मिले । इसलिए वह अंत तक अपने अधिकारों के लिए लड़ती है ।

1.1.4) व्यभिचारी माता -

उपन्यास का मूल विषय यह है कि नारी हृदय हरदम प्यार के दो बूँद के लिए तड़पता है , चाहे वह नारी सती हो चाहे वेश्या हो । माधवी के जीवन में आर्थिक समस्या तो नहीं है लेकिन वह वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री है । पेरियनायकी ने उसे वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत किया है । वेश्यापुत्री होकर भी उसकी शिक्षा-दीक्षा इतने स्वस्थ वातावरण में होती है कि वह कुलीन कन्याओं की तरह आदर्श और भावमयी है । एक वेश्या पुत्री भी कितनी शुद्ध , पवित्र और निश्चल हृदय तथा एकनिष्ठ प्रेम की अभिलाषिनी हो सकती है । अतः उसके कौमार्य में भी किसी को समर्पण करने की तीव्र इच्छा होती है तथा सती-साध्वी पत्नी बनने की लालसा होती है , यह माधवी की जरिए दिखाया है । लेकिन यह समाज उन्हें पवित्र न मानकर अपनी गंदी हवस का शिकार बनाता है । उन्हें नारकीय पापमय जीवन में ढकेलता है । इस उपन्यास में नागर ने माधवी , पेरियनायकी , रुद्रम्माल आदि स्त्रियों को व्यभिचारी माता के रूप में चित्रित किया गया है ।

1.1.4.1) वेश्या माता - माधवी

नागर ने माधवी को व्यभिचारी माँ के रूप में चित्रित किया है । नृत्योत्सव में ही माधवी और कोवलन एक-दूसरे के प्रेमाकर्षण में बँध जाते है । लेकिन जब कोवलन-कन्नगी के विवाह की बात माधवी को पता चलती है तब वह घायल सिंहनी की भाँति तड़प उठती है । माधवी उसे कहती है , "परंतु पतिता का दान भी तुम्हें ग्रहण करना होगा रसराज ! माधवी के प्रेमदान को अस्वीकार न कर सकोगे ।"[15] अपने जादूभरे चुंबन से वह कोवलन को रिझाती है । कोवलन के विवाह के बाद भी उससे प्रेमसंबंध रखती है । वेश्याओं की कुटिल नीति तथा नाटक कर बहाना बनाकर वह कोवलन को अपनी ओर खींचती है । कोवलन की पुत्री की माँ बनने पर भी वह नहीं घबराती । माँ बनने पर परम सुख का अनुभव करती है । वह कोवलन से मीठी-मीठी बातें कर उसे सात भाँवरे लेने पर मजबूर करती है । लेकिन सुहाग के नूपुर न मिलने पर वह तड़पकर आवेश में आकर कोवलन से कहती है, "तो अब यों भी न बैठ पाओगे । मैं अब तुम्हें तुम्हारी चरम गति पर ही पहुँचाकर दम लूँगी । अपना सर्वस्व निछावर कर चुकने के उपरांत अंत में मुझे तुमसे कुछ न मिला । तुम मुझे सती न बना सके तो अब मैं तुम्हें वेश्या बनकर ही दिखलाऊँगी । निकल जाओ मेरे घर से ! उठो, जाओ ! "[16] ऐसा कहकर वह कोवलन को घसीटकर घर से बाहर निकालती है ।

कोवलन को सबक सीखाने के लिए वह राजपुरूष के साथ संबंध बढ़ाती है । एक दिन रात को वह राजपुरुष उसे अपनी हवेली में बुलाता है । तब माधवी को अपनी बेटी का भी खयाल नहीं रहता । अपने एकपुरुषव्रत को तोड़कर काम-विलास में नये प्रेमी के साथ मग्न होती है । बाद में राजपुरुष उसे सच्चाई बताता है कि नगर की वेश्याओं को अपनी सीमा में बाँधने के लिए महाराज ने मुझे भेजा है । यह सुन माधवी स्तब्ध हो जाती है । इतने वर्षों में पहली बार सतीत्व की हत्या होने पर वह हर ऊहापोह से मुक्त होकर अपने-आपको वेश्या होने का अनुभव प्राप्त करती है । जो माधवी बेटी के भविष्य के लिए अपनी जान देना चाहती थी वह आज सोचती है मरकर भी क्या करना है, अब वह अन्य पुरूषों को रिझाएगी ।

1.1.4.2) वेश्या पेरियनायकी -

व्यभिचारी माता के रूप में माधवी की माँ वेश्या पेरियनायकी को चित्रित किया गया है । पेरियनायकी जन्म से वेश्या न होकर बचपन में उसे खरीदकर वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत किया गया था । मार-मारकर वेश्या बनने के लिए मजबूर किया गया था । रोमन व्यापारी पान्सा सेठ को उसने अपने प्रेमजाल में फँसाया है । उससे उसने बहुत धन कमाया है । अपने

भविष्य की चिंता कर माधवी को खरीदकर वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत कराती है । नागर ने एक प्रसंगद्वारा पेरियनायकी के व्यभिचार का उदाहरण दिया है । माधवी जब चकवे-चकवी को अलग-अलग रखकर दम्पती वियोग वेश्या के लिए इष्ट होने की बात कहती है । तब यह सुनकर पेरियनायकी प्रसन्न होकर कहती है, "जीती रहो बेटी ! आशीर्वाद देती हूँ कि तुम इसी तरह चिरकाल तक पतियों के गले का मोती और पत्नियों की आँख का आँसू बनी रहों ।"[17] इस प्रकार वह माधवी को व्यभिचार का मार्ग दिखाकर वेश्या का असली रूप दिखाती है । वेश्या के लिए धन ही सर्वश्रेष्ठ है, धन कमाने के लिए ही वेश्या प्रेम का नाटक कर अमीर आदमी को अपने प्रेमजाल में फाँसती है । अपने जिस्म का सौदा कर धन कमाना वह जानती है । इसलिए जब कोवलन माधवी को छोड़कर चला जाता है तो वह विरह शून्य वेश धारण करती है । यह देख पेरियनायकी उसे समझाती है कि कोवलन को छोड अन्य किसी धनी पुत्र के साथ अपने संबंध बढाओ ।

माधवी और पेरियनायकी को नगर से बाहर निकालने के लिए आंदोलन होता है, तब वह अपने प्रेमी पान्सा का आधार पाती है । पान्सा का व्यापारिक प्रभुत्व नष्ट न हो इसलिए माधवी को घर से बाहर निकालने के लिए तैयार होती है । इस प्रकार उसमें स्थित वेश्या अम्मा की कुटनीति तथा स्वाभाविक गुण दिखाई देते है । जब पान्सा का सब व्यापार चौपट होकर उसपर पर नगर छोड़ने की नौबत आती है तब पेरियनायकी कोई बहाना बनाकर उसे टालती है । लेकिन जब पान्सा फिर से धन कमाकर नगर में वापस आता है तब फिर से वह अपने संबंध स्थापित करती है । इस प्रकार पेरियनायकी के चरित्रद्वारा नागर ने कुट्टिनी, दाँवपेंची तथा अपने धंदे के अनुसार वेश्याअम्मा के चरित्र को चित्रित किया है । खुद व्यभिचार कर अपनी पुत्री को भी व्यभिचार करने के लिए प्रेरित करनेवाली स्वार्थी व्यभिचारी माता के रूप में पेरियनायकी का चित्रण हुआ है ।

1.1.4.3) देवदासी रूद्रम्माल -

व्यभिचारी माँ के रूप में देवदासी रूद्रम्माल का चित्रण हुआ है । देवदासी की शादी भगवान से की जाती है । मंदिर के पुजारी की वह भोग्या होती है । इस उपन्यास में चित्रित देवदासी रूद्रम्माल पुहारेश्वरम् मंदिर की प्रधान देवदासी है । उसे नगर में मानसम्मान तो मिलता है, लेकिन पुजारी के हवस का शिकार बनने पर उसे एक पुत्री भी होती है । उसका नाम ललिता है । रूद्रम्माल अपनी बेटी को भी अपनी तरह बनाना चाहती है । खुद व्यभिचार कर अपने बेटी को भी व्यभिचार करने के लिए प्रवृत्त करती है ।

इस प्रकार 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में अमृतलाल नागर ने व्यभिचारी माताओं का चित्रण किया है । ये स्त्रियाँ पहले तो सर्वसामान्य होती है ; लेकिन समाज उन्हें अपनी काम-विलासिता की पूर्ति का साधन बनाता है । परिस्थितिवश रूढ़ि, परंपराओं के निर्वाह हेतु वह आगे बढती है । इसका नागर ने यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यास के उद्देश्य और चरित्र में बडे कौशल से सामंजस्य उपस्थित किया है । महाजनों, देवदासी तथा वेश्याओं के जीवन का पर्दाफाश किया है । "मनुष्य तभी तक स्थित है, जब तक उसके पैरों के नीचेवाला चरित्र का धरातल स्थित है । एक बार उसके पैरों के नीचेवाला धरातल खिसका बस उसका पतन आरंभ हो गया ।"[18] यही सत्य, प्रस्तुत उपन्यास में उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है ।

1.2) परिवारेतर रूप -

प्राचीन काल से नारी के पारिवारिक रुपों को महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता रहा है । नारी के इन रुपों को सराहा गया है । परंतु इन रूपों से भिन्न परिवारेतर रुपों में उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण घृणित ही रहा है । नारी के परिवारेतर रुपों में प्रमुखतः दासी, देवदासी, कलंकिता, वेश्या आदि रूप सम्मिलित होते हैं । अमृतलाल नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नारी के इन रूपों को कम-अधिक मात्रा में चित्रित करने का प्रयास किया है ।

1.1.1) दासी - देवंती -

प्रस्तुत उपन्यास में मानाइहन सेठ की हवेली में काम करनेवाली देवंती दासी का यथार्थ चित्रण नागर ने किया है । जो कन्नगी की बालसखी भी है । सुहागरात पर कन्नगी डर जाती है तो देवंती उसे समझाकर कोवलन के पास भेजती है । इन दोनों में मालकिन और दासी का संबंध न दिखाकर सखियों का हास-परिहासभरा संबंध दिखाया है । माधवी जब कन्नगी की हवेली से वंशवृक्षपट्ट ले जाती है, तब देवंती कन्नगी को समझाती है कि इसी तरह तुम शांत रहोगी तो एक दिन माधवी तुम्हारे अधिकार छीन लेगी । देवंती चीढकर कहती है, "मैं अभी भी तुम्हारा नाम ले उस घर से वंशवृक्ष माँग लाती हूँ । जब तक तुम इस घर में उपस्थित हो, कुलाचार के विरुध्द यह अंधेरखाता कदापि नहीं चल सकता । सिंह के वंश में श्रृगाली की संतान का नाम कदापि नहीं लिखा जाएगा । मैं दासी ही सही, किंतु तुम्हारी बालसखी भी हूँ । तुम्हारे दो कुलों के अन्न से ही मेरी देह पली है ।"[19] यह कहकर वह माधवी के कोठे पर जा अपने सखी के हक के लिए कोवलन से जाकर बहुत कुछ कहती है । माधवी वंशवृक्षपट्ट देने से इन्कार करती है, तब देवंती कोवलन से अनुरोध करती है कि चोल महाराज से न्याय लेने पर मुझे दोष न देना । वह अपनी स्वामिनी के हक और अधिकारों के लिए लड़ती है । अपनी सखी का अपमान वह कदापि सह नहीं सकती ।

इस प्रकार नागर ने देवंती को सच्चाई और नेकी का रास्ता अपनानेवाली दासी को चित्रित किया है । वह कन्नगी को समय-समय पर समझाती है, उसका हौसला बढ़ाती है । अपनी सखी से प्यारभरी बातें कर उसे छेड़ती है । उसमें स्वामीभक्ति, आदर सहज दिखाई देता है । मालकिन की खुशी मे ही वह अपनी खुशी मानती है और अंत में मालकिन के लिए अपनी जान देती है । इस प्रकार देवंती में एक सत्यनिष्ठ दासी के दर्शन होते है ।

1.2.3) नागरत्ना -

प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने वेश्या माधवी के कोठे पर काम करनेवाली दासी के रूप में नागरत्ना को चित्रित किया है । माधवी के कोठे पर आनेवाले ग्राहक तथा महमानों को मदिरा देना, भोजन की व्यवस्था करना, तथा उनकी सेवा करना आदि काम वह करती है । माधवीद्वारा दिए संदेश कोवलन को गुप्तव्दार से जाकर पहुँचाती है । माधवी के सुख-दुख में साथ देनेवाली, समय आने पर जासूसी करनेवाली नागरत्ना माधवी की सुश्रुषा भी करती है । लेकिन वह बदले में कुछ पाने की इच्छा भी रखती है । तात्पर्य स्वार्थी, लालची वृत्ति उसमें स्पष्ट दिखाई देती है । फिर भी माधवी का हरहालत में अंत तक साथ वह देती है ।

1.2.1.1) देवदासी -

धर्म और धर्ममार्तड़ों के क्रोड में पली देवदासी प्रथा स्त्री के लिए एक शाप है । समाज का अज्ञान और अंधश्रध्दा ही इसके प्रमुख कारण है । मानव जीवन और दुनिया का नियंत्रण करनेवाली शक्ति ईश्वर है । इसको प्रसन्न करने के लिए पशुबलि के साथ-साथ माँ-पिता के द्वारा बच्चियों को भगवान के नाम पर छोड़ना या अर्पित करने की प्रथा प्राचीन काल से भारतीय समाज में चल रही है । "देव मंदिरों में भेंट रूप में चढ़ाई जानेवाली ये कन्याएँ नाममात्र की देवदासियाँ होती थी । नृत्य-गान में प्रवीण ये युवतियाँ वास्तव में मंदिरों के पुजारी एवं मंहतों की विलासिता की वस्तु हैं । नित्य प्रति सोलह श्रृंगार युक्त ये देवदासियाँ अपनी सुंदरता के अनुकूल ही पुजारी महाराज की विलास सामग्री बनती । देवदासी कहनेवाली ये कन्याएँ ही इच्छा या अनिच्छा से नित्य मंदिरों के सुसज्जित प्रकोष्ठ में विलासमय जीवन व्यतीत करने पर बाध्य की जाती हैं ।"[20] माँ-पिता या रिश्तेदार ही देवदासियों को वेश्यावृत्ति के लिए प्रोत्साहित करते थे । वेश्यावृत्ति के उद्देश्य से ही लड़की को देवदासी बनाया जाता था । इस उपन्यास में देवदासी रूप में रुद्रम्माल का चित्रण किया गया है ।

1.2.1.2) रुद्रम्माल -

रुद्रम्माल पुहारेश्वरम् मंदिर की प्रधान देवदासी है । समाज में उसे यथोचित आदर-सम्मान मिलता है । नगर के किसी भी उत्सव या समारोह में उसे मुख्य मंडप में बिठाया जाता है ।

नृत्योत्सव में महाराज की बाई ओर बैठने का बहुमान उसे मिलता है । हर साल नृत्योत्सव की शुरूवात परम्परानुसार मुख्य देवदासी रुद्रम्माल के गायन से होती है । इस साल रुद्रम्माल की बेटी ललिता ने नृत्योत्सव में हिस्सा लिया था । देवदासी रुद्रम्माल प्रतिष्ठित देवदासी वर्ग की होने के कारण प्रधान नृत्याचार्य शंकरन मुदलियार उसकी बेटी ललिता को नृत्य सिखाते है ।

देवदासियों में प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित भेद माना जाता है । 'दत्ता' वर्ग को प्रतिष्ठित मानकर उस वर्ग में लडकी स्वेच्छा से देवसेवा में समर्पित होती है । तो 'हृत्ता' वर्ग को अप्रतिष्ठित माना जाता है, क्योंकि उसमें उड़ाई गई लडकियाँ तथा मजबूरी में जो लडकियाँ देवमंदिरों में समर्पित होती है उनका समावेश होता है । प्रस्तुत उपन्यास में महादंडाधिकारी की हवस का शिकार बनी महाजनी लड़की को मजबूरी में देवदासी बनना पड़ता है । तब प्रतिष्ठित देवदासियाँ आंदोलन कर उसे 'दत्ता' वर्ग में सम्मिलित न कर 'हृत्ता' वर्ग में सम्मिलित करवाती है । इस प्रकार नागर ने आलोच्य उपन्यास में देवदासी प्रथा तथा देवदासियों पर प्रकाश डाला है । वेश्याओं में और देवदासियों में कोई अंतर नहीं होता, वे यही दिखाना चाहते है । लेकिन समाज का वेश्याओं की ओर देखने का दृष्टिकोन घृणित होता है और देवदासियों को आदर-सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । यह भेद माधवी और रुद्रम्माल के व्दारा दर्शाया है । नागर ने देवदासी समस्या को उठाकर धर्म की आड़ में चले व्यभिचार का पर्दाफाश किया है । लेकिन मूलतः उनका उद्देश्य आदर्शवादी है । उन्होंने कहीं भी देवदासियों का अश्लील चित्रण नहीं किया, बल्कि उसे नष्ट करने की कामना की है ।

1.2.2.2) कलंकिता -

नारी के परिवारेतर रूप में नागर ने उसे कलंकिता के रूप में भी चित्रित किया है । नारी किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी की माँ, किसी की भाभी, किसी की दादी, नानी होती है और जब वह इनमें से कुछ नहीं होती तो वह वेश्या बन जाती है । नारी को वेश्या समाजव्दारा ही बनाया जाता है और वेश्या को कलंकिनी के रूप में उद्घोषित करनेवाला यही समाज होता है । "जिस समाज तथा संस्कृति ने नारी को इतना निरीह बना दिया वहाँ वैयक्तिक चारित्रिक हीनता की दुहाई देकर सब दोष वेश्याओं के सिर मढ़कर तटस्थ रहना घोर असामाजिकता है । ऐसी स्थिति में आक्रोश वेश्या पर नहीं वरन् समाज पर होना चाहिए ।"[21]

कलंकिता नारी के रूप में माधवी को चित्रित किया गया है । माधवी वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री है । बचपन से ही उसे वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत किया जाता है । माधवी कुललक्ष्मी बनने की लालसावश कन्नगी के अधिकार छीनकर खुद कोवलन की पत्नी बन अपनी पुत्री को समाज में मान-सम्मान देना चाहती है । लेकिन अंत तक वह कन्नगी के सुहाग के नूपुर

हासिल नहीं कर पाती । तो वह कोवलन से ईर्ष्यावश और जलन के कारण वेश्याधर्म निभाने की ठान लेती है ।साथ ही उसके स्वभावगत दुर्गुण उसे कलंकित कर देते है । कुललक्ष्मी कन्नगी का संसार ध्वस्त करने से समाज उसे कलंकिनी के रूप में तिरस्कृत करता है । माधवी को कलंकिनी बनाने के लिए सामाजिक रूढ़ियाँ जिम्मेदार है ।

कलंकिता के रूप में वेश्या चेलम्मा का भी चित्रण किया है । वह जन्म से वेश्या न होकर मार-पीटकर उसे वेश्या बनाया गया है । चेलम्मा ने जवानी में 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार प्राप्त किया था । उसके सौंदर्य पर युवावर्ग फिदा है । सभी युवक उससे प्रेमयाचना करते है । उसके दीवाने बने फिरते है । वह सबसे धन लुटती है , किंतु एक समय ऐसा भी आता है कि एक व्यापरी उसका सारा धन लुटता है । तब बुढ़ापे में भिखारन बन मंदिर की सीढ़ियों पर बैठती है । रोगग्रस्त होने के कारण लोग उसका स्पर्श करना भी पाप समझते है । लोग उसे कलंकिनी कहकर गालियाँ देते, व्यंग्य करते है । महागर्विता चेलम्मा का बूढापे में सब गर्वगुमान नष्ट हो जाता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में पेरियनायकी का चित्रण भी कलंकिता के रूप में किया गया है । वेश्या पेरियनायकी अपनी कुटनीति और दाँव-पेंच से पान्सा सेठ को प्रेमजाल में फाँसकर उससे खूब धन कमाती है । माधवी को भी वेश्यानीति के गूढ़ सिखाती है । प्रेम का झूठा नाटक कर पुरुषों के द्वारा खूब धन कमाना ही हमारा वेश्या धर्म है, यह वह मावधी को सिखाती है । पेरियनायकी के रूप में एक स्वार्थी , दंभी, कामुक स्त्री हमारे सामने आती है , जो केवल पैसों से प्यार करती है ।

इस प्रकार नागर ने माधवी , चेलम्मा और पेरियनायकी को कलंकिता के रूप में चित्रित किया है । साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि ये स्त्रियाँ सती बनकर एक पुरुषव्रत निभाने के लिए कितना तड़पती है । जीवनभर संघर्षरत रहकर समाज में आदर पाना चाहती है लेकिन समाज उन्हें अपनी विलासप्रियता की पूर्ति के लिए वेश्या बनाकर ही छोडता है । तात्पर्य- इसका यथार्थ रूप में चित्रण करने में नागर को सफलता मिली है ।

2) **वेश्या समस्या -**

वेश्या जीवन की कहानी भारत में संचित निधि है । केवल राजा महाराजाओं के दरबार में ही नही; बल्कि देवाधिपती इन्द्र के दरबार में भी जिन्हें मनोरंजन के लिए नचाया जाता था । तब वह प्रतिष्ठा का प्रश्न माना गया था । लेकिन अब यह प्रतिष्ठा सामाजिक स्तर पर नारकीय पीड़ाओं से बदतर बनी है । स्त्री जीवन के शापित अंग पर नागर ने अपने उपन्यासों के द्वारा विचार-विमर्श किया है । हमारे समाज की चिरपरिचित ज्वलंत समस्या है 'वेश्यावृत्ति' । " हिंदू समाज ने वेश्या प्रथा को बनाये रखने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है । वह एक ओर पति की गहर्तमय

वृत्तियों का समर्थन करता है और दुराचारी पतिद्वारा परित्यक्त नारी को सभ्य समाज से सहायता न मिलने का विधान करके उसे पतन के गर्त में गिरने को विवश करता है । तो दूसरी ओर पारिवारिक पर्वो तथा धार्मिक उत्सवों मे वेश्या का विशेष आदर सम्मान करके अपनी कुत्सित मनोवृत्ति का परिचय देता है ।"[22] सामन्यतः कोई भी स्त्री अपनी मर्जी से वेश्या नहीं बनती । सदियों से पुरुष ने स्त्री को वासनातृप्ति का साधन माना है । पुरुष की वासनातृप्ति उचित मार्ग से न होने पर पथभ्रष्ट हो जाता है । इसी पथभ्रष्टता का नाम वेश्या व्यवसाय है ।

प्रेमचंद युग भारतीय समाज का नवजागरण का युग है । प्रेमचंद ने 'सेवासदन' उपन्यास में वेश्या जीवन के संदर्भ में मानवता के स्तर पर गहराई से विचार किया है । वेश्यावृत्ति में व्यावहारिक स्तर पर तन बेचे और खरीदे जाते है । शरीरों की विक्री अवैध है । जहाँ पैसा प्रधान होता है वहाँ भावना का अभाव होता है । वेश्यावृत्ति समाज के लिए आवश्यक तो है , लेकिन जब हम स्वस्थ समाज तथा सामाजिक स्वास्थ्य के संदर्भ में सोचने लगेंगे तब उसकी भयानकता हमारे सामने आएँगी । आज तो वेश्यावृत्ति इतनी भयानक बन गई है कि 'एडस्' के माध्यम से वह समाज के सामने मृत्यू के रूप में खड़ी है । वेश्यागामी लोग अपने घरवालों का और समाज का जीवन भी तबाह करते है । स्त्री अपना शरीर बेचकर केवल स्त्रीत्व से ही नहीं मनुष्यत्व से भी गिर जाती है । स्त्री का यह घृणित रूप मानव जाती पर कलंक है । आज आधुनिक युग के दौर में नारी विषयक विविध प्रश्नों की चर्चा बड़ी गंभीरता से हो रही है । इस परिस्थिति में नारी विषयक प्रश्नों के संदर्भ में वेश्या समस्या का अध्ययन नितांत आवश्यक बन गया है । जिस देश में स्त्री की माँ के रूप में पूजा की जाती है, उस देश में मनुष्य की वासनातृप्ति के लिए स्त्रियों को इज्जत तक बेचनी पडती है, यह अत्यंत लज्जाजनक बात है । कई स्त्रियाँ वंशपरंपरा से व्यवसाय करती है । ये वश्याएँ समाज की **नजरों से गिरी हुई होती है , हर शहर या गाँव के किसी विशिष्ट स्थानपर अपने शरीर का बाजार** सजाती है । वेश्याएँ चाहकर भी वेश्या व्यवसाय छोड़ नहीं सकती । कई वेश्याएँ केवल वेश्या माँ की कोख से जन्म लेने के कारण उन्हें भी वेश्या व्यवसाय अपनाना पडता है । आज के युग में स्वतंत्र रूप से व्यवसाय करनेवाली वेश्याओं में 'कॉलगर्ल' नामक वेश्याओं का वर्ग है, जो इस क्षेत्र, में बहुत प्रसिध्द है । ये वेश्याएँ सुंदर, कुलीन और विवाहित भी होती है । ये वेश्याएँ किसी के बुलाने पर चुपचाप होटल के किसी कमरे में जाकर अपने ग्राहकों को कामसुख देती है ।

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने वेश्या समस्या पर प्रकाश डाला है । उन्होंने ऐतिहासिक कथा के सहारे आधुनिक यथार्थ का चित्रण किया है । वेश्या जीवन का कठोर सत्य है वासनासक्ति । उन्होंने अपने उपन्यास के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि जब तक महाजनी सभ्यता शेष

है , तब तक वेश्यावृत्ति किस न किसी रूप में चलती रहेगी । नारी अन्याय सहनेवाली महापात्री है , जिस पर पुरुष जाति ने सनातन काल से अनवरत अत्याचार किए है , उसकी मूक विवशता को जब चाहा 'कुलवधु' की मान्यता देकर दासी बना लिया और जब चाहा तब 'नगरवधु' की संज्ञा से संबोधित किया । नागर ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधुनिक कालीन सामाजिक चित्र को उभारा है । वेश्या समस्या का उन्होंने दो रूपों में विवेचन किया है ।

2.1) धार्मिक दृष्टि से -

धर्म समाज का अविभाज्य अंग है । भारतीय संस्कृति में 'धर्म' अपनी अहम् भूमिका निभाता है । सनातन काल से ही भारतीय समाजव्यवस्था में धर्म के अंतर्गत ही देवदासी प्रथा का महत्त्व रहा है । मंदिर के पुजारी अपनी भोग-विलासिता की पूर्ति के लिए देवदासियों को भोगते थे ।"धर्म की ओट में इसको चलानेवाले ये ही महात्मा थे जो गृहस्थाश्रम को छोड़कर भी भोगविलास की कीचड़ में गले तक डुबे हुए थे । आखिर इन लम्पटों का काम क्योंकर चलता और वे अपनी इंद्रियों की तृप्ति कैसे करते इसलिए उन लोंगो ने यह घृणित, निन्दा , हेय, पापमय और शोचनीय देवदासी प्रथा को धर्म के आवरण में ढ़ककर चला ही तो दिया ।"[23]

2.1.1) देवदासी प्रथा -

वास्तव में वेश्या और देवदासी में कोई अंतर नहीं माना जाता । वेश्या अलग-अलग ग्राहकों से संबंध रखती है और देवदासी मंदिर के पुजारियों की काम-विलासिता की पूर्ति करती है । "प्राचीन काल से दक्षिण हिंदू-स्थान में देवदासी प्रथा चलती आयी है, छोटी लड़कियों को नृत्यांगना, गायिका या सेविका के रूप में देवमंदिरों में देवता के चरणों में अर्पित किया जाता है । इन्हें नृत्य, गायन और अन्य कलाओं में पारंगत किया जात है, ये जिदंगीभर वहीं रहती है । वे विवाह करके सभ्य स्त्री के रूप में नहीं रह सकतीं । युवावस्था प्राप्त होने पर ये स्त्रियाँ वेश्या व्यवसाय और मंदिर में आये पुरुषों की सेवा करके पैसे कमाती है ।"[24] समाज में देवदासी को आदर-सम्मान दिया जाता है । 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने रूद्रम्माल के द्वारा देवदासी के जीवन पर प्रकार डाला है । साथ ही देवदसियों में वर्गभेद दिखाया है । अपने बूढ़ापे में देवदासियों को उसी मंदिर के बाहर सीढ़ियों पर बैठकर भिखारन का जीवन व्यतित करना पडता है , इस वास्तविकता को दर्शाने में नागर को सफलता मिली है । साथ ही उनकी आर्थिक हीनता को भी स्पष्ट किया है । तथा इस प्रथा से अंधविश्वास भी झलकता है ।

2.2) सामाजिक दृष्टि से -

वेश्या वृत्ति समाज निर्मित है । वह समाज में पली है । वेश्या का उपभोग भी समाज ही लेता है । आज वेश्यावृत्ति समाज विघातक बन गई है । अनेक लोगों से शारीरिक संबंध स्थापित करने के परिणामस्वरूप वे अनेक सांसर्गिक रोंगो से त्रस्त बनती है । वेश्यावृत्ति के कारण बीमारियाँ फैलती है , जिससे वेश्या और वेश्यागामी दोनों का जीवन नरक बनता है । कुछ लेखकों ने समाज में वेश्याओं के होने का समर्थन भी किया है । डॉ. बांदिवडेकर ने कहा है, "वेश्याओं की आवश्यकता गाने-बजाने और नाचने का पेशा करने के लिए है और उनके अभाव में इन लेखकों को डर है कि सभ्य समाज की कन्याएँ इस पेशे को अपनाएँगी । फिर दूसरा डर यह है कि वेश्याओं के अभाव में अच्छी बहू-बेटियों के बिगडने की, शीलभ्रष्ट हो जाने की या किये जाने की संभावना है । "[25] अतः भारतीय लोंगो ने वेश्याओं को इसलिए स्वीकृत किया है कि उनके बलबूते पर खानदानी स्त्रियाँ अपने सतीत्व का पालन करें । सामाजिक दृष्टी से वेश्याओं को निम्न रूप में देखा जाता है -

2.2.1) उपभोग्य वस्तु -

स्त्री आदिमकाल से ही पुरुष के सुखोपभोग की वस्तु के रूप में रही है । वेश्या अपने शरीर का उपयोग उपभोग्य वस्तु के रूप में करती है और अपनी जवानी को सही कीमत में बेचती है । वेश्या जब मादा बनती है तो वह मनुष्यता से गिर जाती है । लेकिन असल में वह मनुष्यता से न गिरकर समाज की नजरों में गिर जाती है । सामाजिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों के कारण वेश्या का समाज में कोई स्थान नहीं होता । वेश्यागामियों की विकृति के कारण वेश्याओं ने भी सीमोल्लंघन किया है । वेश्याएँ हर दिन नया ग्राहक ढूँढती है और वेश्यागामी उस पर धन लुटाकर उसके शरीर को उपभोग्य वस्तु के रूप में भोगता है ।

2.2.2) उपजीविका का साधन -

कई स्त्रियाँ दो वक्त की रोटी के लिए अपने शरीर को बेचती है । अपने शरीर को आर्थिक हीनता के कारण उपजीविका का साधन बनाती है । "यह सत्य है कि वेश्यावृत्ति के प्रचलन में आर्थिक विपन्नता भी एक सहायक तथ्य रहा है । परंतु वेश्यावृत्ति अपना कर ही नारी आर्थिक दुश्चिंता से मुक्त नहीं हो जाती , बल्कि आर्थिक रूप से भी वही वेश्या सुखी व संपन्न हो जाती है जिसमें अपूर्व सौंदर्य नृत्यगान कौशल तथा काम विलास के गूढ रहस्यों की जानकारी हो । वेश्यावृत्ति एक खुला व्यवसाय है जहाँ प्रतियोगिता की होड़ लगी रहती है । पुरुषों को रिझाकर लूटने का गुण वेश्या की सबसे बडी शक्ति है किंतु आयु की वृध्दि के साथ-साथ शारीरिक सौदंर्य की ह्रासात्मक परिणति भी अनिवार्य है, जिससे वेश्या की आर्थिक दुश्चिंता में अभिवृध्दि होने लगती है ।"[26] कुछ

वेशाएँ अपने भविष्य की चिंता कर छोटी बच्चियों को क्रय कर बूढ़ापे का सहारा बनाती है । उन बच्चियों को वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुणों में पारंगत कर उन्हें भी वेश्या मार्ग पर आगे बढ़ाती है । इस उपन्यास में वेश्या पेरियनायकी भी माधवी को क्रय करके इसी मार्ग का अवलंबन करती है ।

2.2.3) आश्रय / अश्रित -

'सुहाग के नूपुर' इस उपन्यास में नागर ने हर एक वेश्या किसी न किसी पुरुष का आश्रय पाना चाहती है , इस वास्तविकता का चित्रांकन किया है । वेश्या पेरियनायकी रोमन व्यापारी पान्सा का आश्रय पाकर उससे खूब धन कमाती है । जब नगर में उसे और माधवी को नगर से बाहर निकालने के लिए आंदोलन होता है तो पान्सा का आश्रय प्राप्त कर वह खुद को सुरक्षित रखती है । माधवी भी कोवलन का आश्रय पाकर महाराज के दंड से बचना चाहती है । अपने जीवन के कटु प्रसंगों में वह किसी-न-किसी पुरुष का आश्रय पाना चाहती है , इसलिए कोवलन से संबंध टूटने पर राजपुरुष के साथ संबंध बढ़ाकर आश्रय पाती है ।

2.2.4) हेय जीवन -

एक बार कोई स्त्री वेश्या बन जाती है, तब नाचना, गाना हरेक के साथ अपने मतलब के लिए प्यार का नाटक करना और उससे धन कमाना यही उसका काम है । वेश्या केवल धन से प्यार करती है । शरीर बेचकर धन कमाना ही उसका व्यवसाय है । लेकिन उसका जीवन घृणा और तिरस्कार से भरा हुआ होता है । समाज उसे कभी आदर , सम्मान तथा अच्छी दृष्टि से नहीं देखता । उनकी कोई इज्जत नहीं होती । लोगों की गालियाँ खाकर उन्हें हेय जीवन जीना पड़ता है । "रूपजीवा की नारी सुलभ कोमल संवेदनाएँ उसे अनायास गरिमामय मानवीय धरातल पर उठा लाती हैं किंतु पुरुष का व्यवसायी मन उसकी भावना की सीमा बाँध देता है । नारी और पुरुष के मनोगत कार्य व्यापार का यह साक्षेप निरूपण अपने आप में मनोरम भी है और नारी की आन्तरिक कोमलता के प्रति लेखक की श्रध्दांजलि भी है ।"[27] नागर ने वेश्याओं के हेय जीवन का चित्रण कर उनके जीवन का दुखान्त माधवी के द्वारा व्यक्त किया है ।

2.2.5) रोगग्रस्त जीवन -

अनेक पुरुषों के अंग-संग के कारण वेश्याओं को कई बीमारियों का सामना करना पडता है । प्रस्तुत उपन्यास में वेश्या चेलम्मा को श्वेतकुष्ठ से रोगग्रस्त दिखाकर उनके जीवन की यथार्थता पर प्रकाश डाला है । उसकी जवानी में सब युवा वर्ग उसके प्रेम का प्यासा बनता है ; लेकिन बूढ़ापे में रोगग्रस्त होने पर उसका स्पर्श करना भी अपवित्र माना जाता है । अर्थिक हीनता के कारण वह भिखारन के रूप में चौराहे पर भटकती है । नागर ने वेश्याओं को कई सांसर्गिक बीमारियों का

सामना करना पडता है , यह चेलम्मा के चरित्रद्वारा दिखाया है । अंत में उन्हें अपने हेय जीवन तथा रोगग्रस्त जीवन पर पछतावा होता है ।

2.2.6) नाजायज संतान -

विवेच्य उपन्यास में वेश्या माधवी की संतान को नाजायज पुत्री के रूप में चित्रित किया है । माधवी कोवलन से प्रेमसंबंध रखती है । जिससे वह एक पुत्री को जन्म देती है, जिसका नाम मणिमेखला है । वह अपनी पुत्री पर वेश्या जीवन की छाया भी नहीं डालना चाहती । अपनी बेटी के अधिकारों के लिए वह सारी दुनिया से लडती है । कोवलन के वंशवृक्षपट्ट पर मणिमेखला का नाम लिखवाना चाहती है । तथा उसका विवाह किसी अच्छे कुल में कराना चाहती है । लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण कोवलन विरोध करता है, क्योंकि समाज की दृष्टि से मणिमेखला एक वेश्या की कोख से उत्पन्न होने के कारण उसे नाजायज औलाद ठहराया जाता है । तब माधवी सिंहनी की भाँति तडपकर महाराज से न्याय माँगने की ठान लेती है । यही संतान अगर कन्नगी के पेट से जन्म लेती तो कोवलन के कुलगौरवानुसार समाज में उसे सम्मान मिलता और उस संतान को जायज ठहराया जाता । नागर ने वेश्या को संतान प्राप्ति दिखाकर जायज और नाजायज संतान का प्रश्न उठाया है, तथा नाजायज संतान सामाजिक अधिकारों से वंचित ही रहती है ।

इस प्रकार 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने वेश्या समस्या के द्वारा उच्च वर्गीयों के पापों का नग्न यथार्थ चित्रण किया है । इस उपन्यास में चित्रित वेश्याएँ मूलतः वेश्याकुल की नहीं है । बचपन में उन्हें वेश्याओं द्वारा क्रय करके मार-पीटकर वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुण सिखाकर जबरदस्ती वेश्या बनाया गया है । बाद में ये बालिकाएँ ही वेश्या अम्माओं के बुढ़ापे का सहारा बनती है । वेश्या परियनायकी , चेलम्मा और माधवी ऐसी ही वेश्याएँ है, जो कालांतर में कुशल वेश्याएँ बनती है । इससे यह भी पता चलता है, कि छोटी-छोटी बच्चियों का क्रय-विक्रय करनेवाली संस्थाओं से संबंध रखनेवाली स्त्रियाँ खुद भले ही वेश्या न हो पर पर्दे की आड में वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित करती है । तब इन छोटी बच्चियों को यह पता भी नहीं होता कि उन्हें क्या बनाया जा रहा है । लेकिन जब उन्हें पता चलता है, तब सामाजिक कुरीतियों से विवश होकर उन्हें वेश्या बनने के लिए बाध्य किया जाता है । इस उपन्यास के द्वारा नागर ने वेश्याओं की दर्दनाक करुण स्थिति का चित्रण किया है । वेश्याओं तथा देवदासियों के द्वारा नागर ने सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया ब है । इनको सही माइने में न्याय तो नहीं मिल सकता लेकिन उनकी ओर सहानुभूति का भाव रखकर समाज को उनकी ओर देखने का घृणित दृष्टिकोण बदलने का प्रयत्न नागर ने किया है । जिसमें उन्हे सफलता मिली है ।

3) अवैध मातृत्व की समस्या -

'सुहाग के नूपुर' इस सामाजिक उपन्यास के माध्यम से नागर ने अवैध मातृत्व की समस्या को चित्रित किया है । इसमें वेश्याओं के अनैतिक संबंधो पर प्रकाश डालकर उससे उत्पन्न अवैध संतांनों की समस्या को चित्रित किया गया है । उपन्यास का धरातल अनैतिक संबंधों पर निर्भर है । वेश्याओं को चरित्रहीन कहकर समाज उन्हें घृणित और तिरस्कृत दृष्टि से देखता है । उनसे जन्मी संतानों को पग-पग पर ठोकरें खानी पड़ती है । न चाहते हुए भी उन्हें अपनी माँ का ही व्यवसाय अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है । समाज के इस तिरस्कृत अंग को नागर ने अपने उपन्यासद्वारा यथार्थ रूप में चित्रित किया है । इस समस्या को चार रुपों में चित्रित किया जा सकता है ।

3.1) अधिकारों से वंचित -

वेश्या माधवी और कोवलन दोनों एक-दूसरे के प्रेमाकर्षण में बँध जाते है । माधवी कोवलन की पुत्री की माँ बनकर परम सुख का अनुभव करती है । इससे उसमें गृहिणी भाव जागता है और वह कोवलन से 'सुहाग के नूपुर' की माँग करती है । तब कोवलन कहता है, "पिता विलासी, माँ रूपजीवा । दोनों ने संतान की इच्छा से जिस बेटी को जन्म नहीं दिया, उसकी माँ सुहाग के नूपुर पहनने के योग्य नहीं और न उसका पिता ही पिता कहलाने योग्य ।"[28] इससे पता चलता है कि वेश्या माधवी और उसकी संतान को समाज में वह इज्जत नहीं मिलती जो एक कुलवधु की संतान को मिलती है । माधवी अपनी बेटी पर कुलीनों के संस्कार कर उसे वह सब अधिकार देना चाहती है, जो एक कुलीन पुत्री को मिलते है । वह अपनी बेटी का विवाह उच्चकुल में करना चाहती है लेकिन समाज उसकी बेटी को इन कुलीन अधिकारों से वंचित रखता है ।

3.2) वंश-परंपरा विहिन -

कोवलन से संतान प्राप्ति होने के कारण माधवी कोवलन की हवेली से वंशवृक्षपट्ट मँगाकर उसपर मणिमेखला का नाम लिखवाना चाहती है । लेकिन समाज के भय से कोवलन उसे ऐसा करने नहीं देता । "उसे यह भलिभाँति विदित था कि एक वेश्यापुत्री को न तो समाज में कोई सम्मानित स्थान प्राप्त हो सकता है और उसकी दृष्टि में उसकी पाक-साफ नियत एवं आदर्श उच्च चरित्र का कुछ भी महत्त्व हो सकता है ।"[29] वेश्यापुत्री को पिता का नाम न होने से समाज उसे अनौरस कहकर तिरस्कृत करता है । फलस्वरूप वेश्यापुत्रियों को माँ का व्यवसाय अपनाना पड़ता है । यह सब समझकर माधवी अपनी बेटी के भविष्य के बारे में चिंतित होती है । वह कोवलन के

वंश-परंपरा में मणिमेखला को स्थान देकर उसका हक उसे सही अर्थों में देना चाहती है । बाकी सब लोग तो दूर लेकिन कोवलन ही अपनी वेश्यापुत्री को वंश-परंपरा से वंचित रखता है ।

3.3) निराधार जीवन -

हर स्त्री का जीवन मूलतः मातृत्व की प्राप्ति से ही सफल होता है लेकिन माधवी का यह मातृत्व उसके सम्मान का नहीं; बल्कि पतन का कारण बन जाता है । माधवी वेश्या होकर भी एकपुरुषव्रत निभाकर कोवलन पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है, लेकिन कोवलन उसे कुलवधु नहीं बना सकता । इस ईर्ष्या से राजपुरुष से संबंध बढ़ाती है । राजपुरुष उसे वेश्या बनाकर उसके एकपुरुषव्रत को तोड़ता है । तब भी वह अपने बेटी पर अपने वेश्या जीवन की छाया न पडे इसलिए अपनी बेटी को कन्नगी के पास पहुँचाने के लिए राजपुरुष से निवेदन करती है । छोटी सी मणिमेखला को सिर्फ उसकी माँ का ही आधार था, वह भी छूटने से वह निराधार बन जाती है । प्राकृतिक आपदा के कारण कावेरीपट्टणम नगर ध्वस्त होता है । एक बौध्द भिक्खु मणिमेखला को डुबने से बचाता है ; लेकिन बाकी सब लोग तितर-बितर हो जाने से मणिमेखला अकेली रह जाती है । वह रो-रो के खुद को अनाथ महसूस करती है । नगर के सब लोगों की बाढ़ में डुबकर मृत्यू होने से उसे निराधार जीवन जीना पडता है ।

3.4) देवदासी पुत्री का सम्मान -

अवैध मातृत्व की समस्या देवदासियों में भी दिखाई देती है । देवदासी रूद्रम्माल की बेटी ललिता अवैध पुत्री है, लेकिन देवदासियों को समाज में मान-सम्मान मिलता है । इस कारण रूद्रम्माल को अपनी अवैध संतान के प्रति कोई चिंता नहीं सताती । लोग एक वेश्यापुत्री को समाज में सम्मान नहीं देते, लेकिन देवदासी पुत्री को सम्मान देते है; बल्कि दोनों विलासपूर्ण जीवन बिताती है ।

इस प्रकार नागर ने अवैध मातृत्व की समस्या को उठाकर समाज के इस तिरस्कृत अंग का चित्रण किया है । विवाहबाहय संबंध को अनैतिक मानकर उनकी संतानों को अवैध ठहराया जाता है । उन्हें कौन-कौनसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है , इसका पूरा ब्यौरा नागर ने दिया है । अंत में यह स्पष्ट किया है कि जब तक नारी जाति का समादर नहीं किया जाता तब तक नारी की समस्याओं का अंत नहीं हो सकता ।

4) कुलवधु , नगरवधु की समस्या -

विवेच्य उपन्यास की यह चौथी महत्वपूर्ण समस्या है । हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रारंभिक युग से ही कुलवधु और नगरवधु की समस्या तथा संघर्ष का चित्रण किया है । कुलवधुओं को आदर्श रूप में रखकर नगरवधुओं की भर्त्सना की है । प्रेमचंद और प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों ने

नगरवधुओं को इस तरह सिध्द करने का प्रयास किया है कि उसमें भी नारी सुलभ गुण होने के कारण वह भी एकपुरुषव्रत साधकर कुलकवधु बनने के लिए ललायित होती है । सती बनने की महत्त्वाकांक्षा उसके मन में होती है । जीवन को इन दो तटों को छूते हुए बहना होता है । शायद प्रत्येक के जीवन में ऐसे दो तट रहते हैं -एक आदर्श, दूसरा यथार्थ, एक प्रेम पात्र, दूसरा भोग-पात्र ।

हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद के पश्चात अमृतलाल नागर ने ही कुलवधु और नगरवधु का सुक्ष्म दृष्टि से चित्रण किया है । 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में कुलवधु और नगरवधु का यथार्थवादी चित्रण किया गया है ।

4.1) कुलवधु कन्नगी -

प्रस्तुत उपन्यास में देवी कन्नगी को कुलवधु के रूप में चित्रित किया गया है । कुलगौरवानुसार उसका विवाह कोवलन से होता है । सुहागरात पर कोवलन उससे पूछता है , 'तुम कौन हो ?' तब तुरंत पति के चरण, छूकर वह कहती है, 'आपकी दासी' । कोवलन उसे वेश्या माधवी के कोठे पर उसकी सेवा करने के लिए ले जाता है । पति के वेश्यागामी होने का परिचय सुहागरात पर ही उसे होता है । माधवी से ईर्ष्या न कर शांत और संयमित भाव से उसके प्रश्नों के उत्तर देकर कोवलन के साथ वापस घर लौटती है । श्वसुरद्वारा वेश्या के कोठे पर जाने की बात पूछने पर पति के कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए झूठ बोलती है और इस तरह अपने श्वसुरकुल की लाज बचाती है । कन्नगी कोवलन के पिता बनने पर माधवी से घृणा न कर उसे उपहार भेजती है । माधवी जब घर पर रहने आती है, तब उसकी और उसकी बच्ची की सेवा करती है । अपना एक-एक आभूषण बेचकर माधवी की माँगो को पूरा करती है । लेकिन कोवलन से घर की आर्थिक हीनता के बारे में एक शब्द से भी नहीं कहती । नूपुर माधवी को न देनेपर कोवलन उसे घर से निकालता है, पर श्वसुरकुल की लाज बचाने के लिए धर्मशाला में जाकर रहती है । कोवलन को चेलम्मा जब बेसुधी के स्थिति में धर्मशाला में लाती है, तब वह पति के कठोर आचरण को भूलकर उसकी सेवा करती है । उसे नया व्यापार शुरू करने के लिए अपने नूपुर बेचने के लिए देती है । कोवलन को चोर ठहराकर प्राणदंड दिया जाता है, तब चंडिका बन उसे निर्दोष सिध्द कर, उसके प्राण बचाती है । यह सबकुछ एक कुलवधु ही कर सकती है ।

स्त्री-पुरुष संबंधो की पहली कडी दाम्पत्य संबंध है । भरतीय सामाजिक जीवन में दाम्पत्य संबंध या विवाह वासनापूर्ति का साधन नहीं है । वह जीवन का पवित्र बंधन, त्याग एवं समर्पण का

चिन्ह है । वह आत्मा की अद्वैतता एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का मार्ग है । कुलवधुओं के इन संस्कारों को अच्छी तरह से जानकर कन्नगी उसे अंत तक निभाती है ।

कन्नगी अपना धर्म तो ठीक निभाती है । पति को परमेश्वर मानकर उसको पूजती है, उसके सारे गुनाहों को माफ कर देती है । लेकिन महाजनी सभ्यता के उच्च वर्गीय पुरुष विवाह तो किसी उच्च कुलोत्पन्न स्त्री से करते है ; लेकिन वेश्या के साथ अनैतिक संबंध रखते है । अपनी पत्नी को पैरों की जूती समझकर उसके साथ दुर्व्यवहार करते है । लेकिन कुलवधु अपने पति-परमेश्वर के खिलाफ उफ तक नहीं कहती, इस से उसमें निहित कुलवधु के संस्कार दिखाई देते है । सदियों से दंभी विलासी उच्चवर्गीय पुरुष कुलवधुओं से प्रताड़ना करते आए है । इस तरह समाज के नारी जाति का एक अंग अपनी पीड़ाओं से कराह रहा है । इसका नागर जी ने यथार्थ चित्रण किया है ।

4.2) नगरवधु माधवी -

माधवी वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री है । बचपन से ही उसे वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुण सिखाए जाते है । 'नृत्योत्सव' में 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार प्राप्तकर वह नगर के सर्वश्रेष्ठ धनीपुत्र को भी जीतती है । दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते है । माधवी वेश्या होकर भी कोवलन से संबंध रख एकपुरुषव्रत का पालन कर उसकी पत्नी बनना चाहती है । लेकिन कोवलन - कन्नगी के विवाह के बारे में पता चलते ही माधवी तिलमिला जाती है । वह कोवलन से विवाह के बाद भी प्रेम संबंध रखती है । परिणामतः उन्हे एक बेटी होती है । वह कोवलन से कहती है, "मेरी बेटी ने तुम्हें पिता का पद दिया है, तुम उसकी माँ के पगों में सुहाग के नूपुर तो दो ।"[30] माधवी किसी न किसी बहाने सुहाग के नूपुर हासिल कर नगरवधु से कुलवधु बनने के लिए तड़पती है । अपनी बेटी की शादी भी कुलीन घर में करना चाहती है । लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण कोवलन ऐसा करने मे अपनी असमर्थता प्रकट करता है । तो माधवी लोकलाज छोड़कर कोवलन की हवेली में रहकर कोवलन को अपने साथ सात भाँवरे लेने के लिए मजबूर करती है । उसके बाद वह कन्नगी के सारे अधिकार छीन लेती है , सिवाय नूपुर के । नूपुर पाने के लिए वह बहुत तड़पती है, क्योंकि महाराज के दंड से भी बचना चाहती है । सजा से बचने के लिए वह हर दिन कोवलन को विविध बहाने बनाकर कन्नगी से नूपुर लाने को कहती है । कन्नगी नूपुर देने से इन्कार करती है, तब कोवलन निराश होकर लौटता है । तब माधवी वेश्या बनने की ठान लेती है ।

कोवलन को तडपाने के उद्देश्य से राजपुरुष के साथ संबंध बढ़ाती है ; ताकि महाराज के दंड से भी वह बच जाए । राजपुरुषद्वारा कोवलन को पीटवाकर वह खुद को विजयिनी महसूस करती है । कोवलन माधवी को राजपुरुष के साथ देख गालियाँ देता है । तब माधवी भी अपने मन की भडास निकाकर कहती है कि, लोग कहते है कि मैं समाज का सर्वनाश करती हूँ , लेकिन कोई यह नहीं देखता की मैं भी कुलवधुओं की तरह गृहिणी बन कामकाज कर सकती हूँ । लेकिन समाज के दंभी पुरुष वेश्या को केवल विलास का साधन बनाकर निकम्मा छोड़ते है । फिर क्यों न एक वेश्या समाज से घृणा करे ? कोवलन को कामी कुत्ता कहकर राजपुरुष के साथ चली जाती है । लेकिन राजपुरुष महाराज की आज्ञा का पालनकर माधवी को वेश्या बनाकर उसके एकपुरुषव्रत को तोड़ता है । इस हालत में भी वह अपनी बेटी को कन्नगी के पास छोडने का निवेदन करती है । अंत में वह इस आघात से पागल हो जाती है । नगरवधु होने के कारण उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है ।

4.3) नगरवधु पेरियनायकी -

पेरियनायकी जन्म से वेश्याकुल की न होकर छोटी उम्र में ही उसे खरीदकर मार-मारकर वेश्या बनाया गया है । वह रोमन व्यापारी पान्सा सेठ के साथ प्रेमसंबंध बनाकर उसे हमेशा रिझाने का प्रयत्न करती है । उससे उसने बहुत धन कमाया है । अपने भविष्य की चिंता कर अपने बूढापे के सहारे के लिए उसने माधवी को खरीद लिया था । इससे उसमें निहित वेश्या की कुट्टिनीवृत्ति स्पष्ट होती है । माधवी को भी वेश्या के लिए आवश्यक सभी कलाएँ सीखाती है । वेश्याअम्मा की तरह माधवी को कुट्टिनशास्त्र तथा पुरुष को अपने प्रेम में फाँसने के दाँवपेंच सीखाती है । कुलवधु बनने की लालसा को छोड़ने के लिए वह माधवी को समझाती है । स्वार्थी, दंभी स्त्री के रूप में पेरियनायकी का चित्रण हुआ है । नगर में वेश्याओं के खिलाफ आंदोलन होता है, तब पान्सा का आश्रय पाकर वह माधवी को घर से बाहर निकालने के लिए भी तैयार होती है । तथा पान्सा का व्यापार चौपट होकर नगर छोड़ने की नौबत आनेपर अपने प्रेमी को कोई बहाना बनाकर टालती है । माधवी जब कोवलन के खातिर विरहवेश धारण करती है तो पेरियनायकी उसे किसी अन्य धनी युवक के साथ प्रेमसंबंध रखने को बोलती है । इस बर्ताव से ही पेरियनायकी में स्थित नगरवधु के गुण स्पष्ट दिखाई देते है । लेकिन उसके मन के एक कोने में नगरवधु होने का दुख हमेशा सलता है ।

4.3) नगरवधु चेलम्मा -

'कामदेव का नवधनुष' उपाधि से पुरस्कृत महागर्विता चेलम्मा जन्म से वेश्याकुल की नहीं है । उसे भी मोल देकर खरीदा गया था । जवानी में रूपसुंदरी चेलम्मा का प्यार पाने के लिए कई धनी युवक उसके आगे-पीछे घुमते थे । कई व्यापारियों के साथ वह देश-विदेश घूमकर आयी थी । अलग-अलग व्यापारियों के साथ प्रेमसंबंध रख उसने बहुत धन कमाया था । लेकिन जिससे वह प्यार करती थी वह प्रेमी उसे मार-मारकर उससे धन छीनकर वेश्या नंदा पर लूटाता । उसके मन में भी कुललक्ष्मी बनने की चाहत थी । वह माधवी को अपना जीवनदर्शन बताती है, "यही सोच-सोचकर मैं स्वयं अपने जीवन का अभिशाप बन गई । वेश्या बनकर भी मैंने चाहा था कि कुलीनों जैसा आचरण करूँ । कोई पुरुष मेरी बाँह गल ले और मैं आजीवन उसे अपना ही मानूँ , पतिव्रता की भाँति उसे केवल अपना बनाकर रखूँ । यह हठ मुझे खा गया ।"[31] माधवी में अपनी प्रतिछबि देखकर वह डर जाती है । माधवी को न्याय देने के लिए वह चौराहे पर बंदरों का खेल दिखाकर दंभी, विलासी पुरुषों का सच्चा रूप समाज के सामने लाती है , लेकिन उससे कुछ फायदा नहीं होता । बूढ़ापे में चेलम्मा रोगग्रस्त होकर भिखारन बनी है । जिस चेलम्मा द्वारा उच्च वर्गीय महाधनी सेठ अपनी विलासिता की पूर्तता करना चाहते थे, आज वही उसका स्पर्श करना भी पाप समझते है। रोगग्रस्त होने के कारण सार्वजनिक उत्सवों, समारोहों में उसे अन्य लोगों के साथ नहीं बैठने दिया जाता । चेलम्मा के द्वारा नगरवधुओं को अंत में जिन रोगग्रस्त समस्याओं का सामना करना पडता है, उसका यथार्थ चित्रण नागर ने किया है । तब उनका साथ देने के लिए समाज का कोई भी पुरुष आगे नहीं बढ़ता, इस सच्चाई को नागर ने पाठकों के सामने रखा है ।

सभी पात्र समाज के अभिशाप से संतप्त और व्यक्ति के विकास की आस्था से आश्वस्त पात्रों की जीवनलीला का परिवेक्षण करने के पश्चात् सामाजिक कुरीतियों के प्रति घृणा का भाव उभाडने में लेखक ने हासिल की है । उपन्यास के निष्कर्ष नवयुग के अंतःकरण से निकली हुई प्रतिध्वनि है । जिसमें प्रेम को व्यवसाय के ऊपर स्थान दिया गया है और व्यापारिक विवाह की भावना पर जिसने हमारे जीवन को मृतक सा बना दिया है, उस पर कुठाराघात किया गया है ।

इस प्रकार 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने कुलवधु के गुण गाकर , कुलवधु और नगरवधु की समस्या तथा संघर्ष का चित्रण किया है । समाज में एक ओर कुलवधुओं की प्रताडना दिखाकर उनकी पीड़ा कन्नगी के द्वारा दिखाई है ।तो दूसरी ओर माधवी , पेरियनायकी , चेलम्मा आदि नगरवधुओं द्वारा यह दिखाने की कोशिश की है कि नगरवधु भी कुलवधु बनकर सतियों की

तरह समाज में इज्जत पाना चाहती है । लेकिन समाज उन्हें अपने हवस के कारण नगरवधु बनने के लिए मजबूर करता है । नगरवधुओं को समाज से हमेशा तिरस्कार और घृणा ही मिलती है , वे कभी आदर का स्थान नहीं पाती , जब कि वह पाना चाहती है । दोनों रूपों में भी नारी की पीड़ाओं का करूण क्रंदन ही सुनाई देता है । पुरुष न तो स्त्री को सती बनाकर सुखी रख पाता है और न ही वेश्या बनाकर । दंभी , विलासी पुरुषों के कारण सदियों से अर्धांग नारी जीवन पीड़ित है । इस यथार्थता को स्पष्ट करने में नागर ने यश संपादित किया है ।

निष्कर्ष

वेश्यावृत्ति संपूर्ण मानव जाति की समस्या है । आज सारे विश्व में वेश्यावृत्ति ने अपना स्थान जमा लिया है । वेश्यावृत्ति स्त्री के शरीर विक्रय से संबंधीत है । हजारों वर्षों से स्त्री केवल पुरुष के उपभोग का साधन बनती आयी है । प्राचीन काल में स्त्री पुरुषों के लिए सहवास मुक्तता, अर्थात् एक पुरुष अनेक स्त्रियों से और एक स्त्री अनेक पुरुषों से कामसंबंध स्थापित कर सकती थी । परंतु विवाह प्रथा ने इस मुक्त समागमन को नियंत्रित कर दिया है और विवाह बाहय काम संबंधो को व्यभिचारी माना गया । परंतु अविवाहित युवक , विधुर तथा काम संबंधो मे विविधता की इच्छा रखनेवालों की समस्या बनी रही । उन्होंने विवाहबाहय संबंधो की माँग की । जिन स्त्रियों ने यह विवाहबाहय काम संबंध धन तथा अन्य सुविधाओं के बदले में परपुरुषों से यौन संबंध स्थापित किये , उन्हे वेश्या कहा गया । प्रत्यक्ष जीवन में व्यवहार में वेश्या घृणित एवं त्याज्य मानी गई । फिर भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय संस्कृति में वेश्याओं का स्थान इंद्र के दरबार से लेकर आज तक विद्‌मान है । स्त्री जीवन का यह अधःपतित अंग नारकीय पीड़ाओं से कराह रहा है । स्त्री जीवन के इस शापित अंग को नागर ने मानवीय धरातल पर चित्रित किया है ।

नारी जन्म से लेकर मृत्यु तक कई रूपों में अपनी भूमिकाएँ निभाती है । बेटी , बहन , प्रेमिका , पत्नी , माँ , बहु , चाची , ननद , फूफी , दादी और नानी आदि कई रूपों में वह अपने रिश्ते निभाती है । युगों से नारी की स्थिति में वैविध्य दिखाई देता है । ऐतिहासिक पन्नों पर युध्दक्षेत्र में वीरांगणा के पद से शत्रुओं का लोहा लेती नारी, आँसुओं से आँचल भिगोती हुई नारी , पुरुषों के इशारे पर नाचनेवाली , गृहस्वामिनी नारी , धार्मिक रूढियों में जकडी हुई नारी , स्वछंद नारी आदि कई रूपों में नारी की स्थिति में वैविध्य दिखाई देता है । नारी तत्व में प्रेरणा है , **शक्ति है , समर्पण है , प्रेम है । नारी की महत्ता गाते हुए कहा जाता है -**

"यत्र नारेस्तु पूज्यते
रम्यते तत्र देवतः ।

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है , वहाँ देवता भी भ्रमण करते है ।अमृतलाल नागर ने नारी को दो रूपों में विभाजित किया है - पारिवारिक रूप और परिवारेतर रूप । पारिवारिक रूपों में सर्वप्रथम पुत्री के रूप में कन्नगी को शांत , संयमी , सात्विक रूप में चित्रित किया है तो माधवी को विद्रोही पुत्री के रूप में चित्रित किया है । उसके बाद पतिव्रता पत्नी की महिमा गायी है । नागर ने माँ के पवित्र रूप के द्‌वारा वात्सल्यभाव तथा ममता को चित्रित किया है । इस चित्रण के साथ-साथ व्यभिचारी माँ बनकर नारी किस हद तक गिर सकती है तथा समाज उसे व्यभिचारी करने

को किस प्रकार प्रेरित करता है इसका भी सफल अंकन हुआ है ।परिवारेतर रूपों में दासियों की ईमानदारी तथा देवदासियों को धर्म की आड़ लेकर , धर्म के ठेकेदार किस प्रकार अपनी विलासिता की सामग्री बनाते है, इसका यथार्थ चित्रण किया हैं । वेश्याओं को कंलकिता के रूप में चित्रित कर उनके कारण ही पति-पत्नी के बीच में दरार आती है ।वेश्या माधवी किस प्रकार प्राणपण से कोवलन की एकनिष्ठ प्रेमिका बन कुलवधुओं के अधिकार प्राप्त करने के लिए तड़पती है और अंत में सुहाग के नूपुर न मिलने के कारण कोवलन से ईर्ष्यावश वह वेश्या बनती है । कुलवधु कन्नगी और नगरवधू माधवी में संघर्ष दिखाकर उपन्यास की रोचकता बढ़ाई है । अवैध मातृत्व की समस्या का चित्रण कर समाज मे नाजायज संतानों को अधिकारों से वंचित तथा निराधार जीवन जीना पडता है । इस का चित्रण नागर ने उत्कृष्ट रीति से किया है । मणिमेखला को न्याय मिलता है या नहीं, इसकी ओर पाठकों जिज्ञासा उत्कंठा को बढ़ाये रखने में नागर सिध्दहस्त हुए है ।

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने मूलरूप से वेश्या समस्या को चित्रित किया है । हमारे समाज की एक चिरपरिचित ज्वलंत समस्या 'वेश्यावृत्ति' है । वेश्या हमारे सामाजिक जीवन का घृणित अंग है , क्योंकि उसमें शरीर विक्रय का व्यापार चलता है । स्त्री को समाज ने इतना मजबूर किया है कि, वह अपना शरीर बेचने को विवश हुई , जब पैसे लेकर कामक्षुधाग्रस्त व्यक्ति को उसने अपना शरीर दिया, तो वह वेश्या कहलाई गई । समाज की दकियानूसी परंपराएँ और समस्याओं में हमें वेश्यावृत्ति की नींव दिखाई देती है । समाज तो अनियंत्रित वर्तन करता रहा लेकिन उस पर रोक लगानेवाली धर्म व्यवस्था ने भी देवदासियों के रूप में वेश्या निर्माण में समाज का साथ निभाया । महत्त्वपूर्ण बात यह है कि, समाज ने विवाह बाहय संबंध को व्यभिचार माना ; लेकिन वेश्याओं को पैसे देकर खरीदा , शरीर संबंध रखना व्यभिचार नहीं ; बल्कि व्यवसाय माना ।

अमृतलाल नागर ने वेश्या व्यवसाय में निहित धर्मव्यवस्था और सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश किया है । इसलिए उन्होंने वेश्यावृत्ति के कारण समाज रचना में तथा सामाजिक और धार्मिक धारणाओं में ढूँढे है । वेश्यावृत्ति की नींव उन्होंने सामाजिक नैतिकता में पायी है । उन्होंने वेश्याओं को मानवतावादी धरातल पर चित्रित कर सामाजिक नैतिकता की सतह पर ऊँचा उठाया है । इसलिए नागर ने वासना के कीचड़ में फँसे इस समाज में अमूलाग्र परिवर्तन लाकर शोषित नारी को वेश्याजीवन से मुक्त करने का प्रयत्न किया है । नए युग में वेश्या समस्या को सामाजिक मानकर उसके निर्मूलन के लिए प्रयत्न हुए , उपाय भी सोचे गए लेकिन वेश्यावृत्ति का निर्मूलन करना संभव नहीं है । नागर ने विवेच्य उपन्यास में वेश्याओं में निहित एकनिष्ठ प्रेम का उदाहरण देकर उन्हें अलौकिक स्थान पर रखा है । नारी सुलभ नैसर्गिक गुणों से युक्त होने के कारण उनमें

भी कुलवधु बनने का मोह तथा लालसा होती है, यह दिखाकर वेश्याओं की आंतरात्मा को छूने की कोशिश की है । वैयक्तिक रूप से नागर ने वेश्याओं को सहानुभूति दिखाकर कुलवधुओं की महिमा गायी है । कुलवधु और नगरवधु इन दोनों रूपों में नारी की पीड़ा का चित्रण किया गया है । नारी जीवन की पीड़ा का चित्रण करने में नागर को सफलता मिली हैं ।

नारी जीवन की यथार्थता से परिचित करवाते हुए उसके दुःख, दर्द, असाहयता को विशद करना ही उपन्यासकार का मूल उद्देश्य हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 171
2) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 47
3) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 80
4) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 206
5) डॉ. सुधीरकुमार - उपन्यासकार इलाचंद जोशी - मूल्यांकन पृ. क्र. 59
6) डॉ. सिंधू भिंगारकर - जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी चित्रण पृ. क्र. 38
7) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 129
8) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 199
9) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 200
10) डॉ. मोहिनी शर्मा - हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य पृ. क्र. 120-121
11) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 137
12) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 211
13) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 47
14) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 139
15) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 55
16) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 187
17) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 31
18) भगवतीचरण वर्मा - आखिरी दाँव पृ. क्र. 15
19) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 135
20) डॉ. श्रीमती शादरा अग्रवाल - द्विवेदी युगीन हिंदी उपन्यास पृ. क्र. 103
21) डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी - हिंदी उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन पृ. क्र. 131
22) डॉ. गणेशन - हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन पृ. क्र. 63
23) किशोरीलाल गोस्वामी - कुसुम कुमारी या स्वर्गीय कुसुम पृ. क्र. 138
24) डॉ. सुधा काळदाते - भारतातील सामाजिक समस्या पृ. क्र.
25) डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर - हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन पृ. क्र. 184
26) डॉ. स्वर्णकांता तलवार - हिंदी उपन्यास और नारी समस्याएँपृ. क्र. 276
27) ऋषभचरण जैन - चम्पाकली , दूसरे फ्लैप
28) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 133
29) डॉ. श्रीमती शादरा अग्रवाल - द्विवेदी युगीन हिंदी उपन्यास पृ. क्र. 108-109
30) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 133
31) अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर पृ. क्र. 37